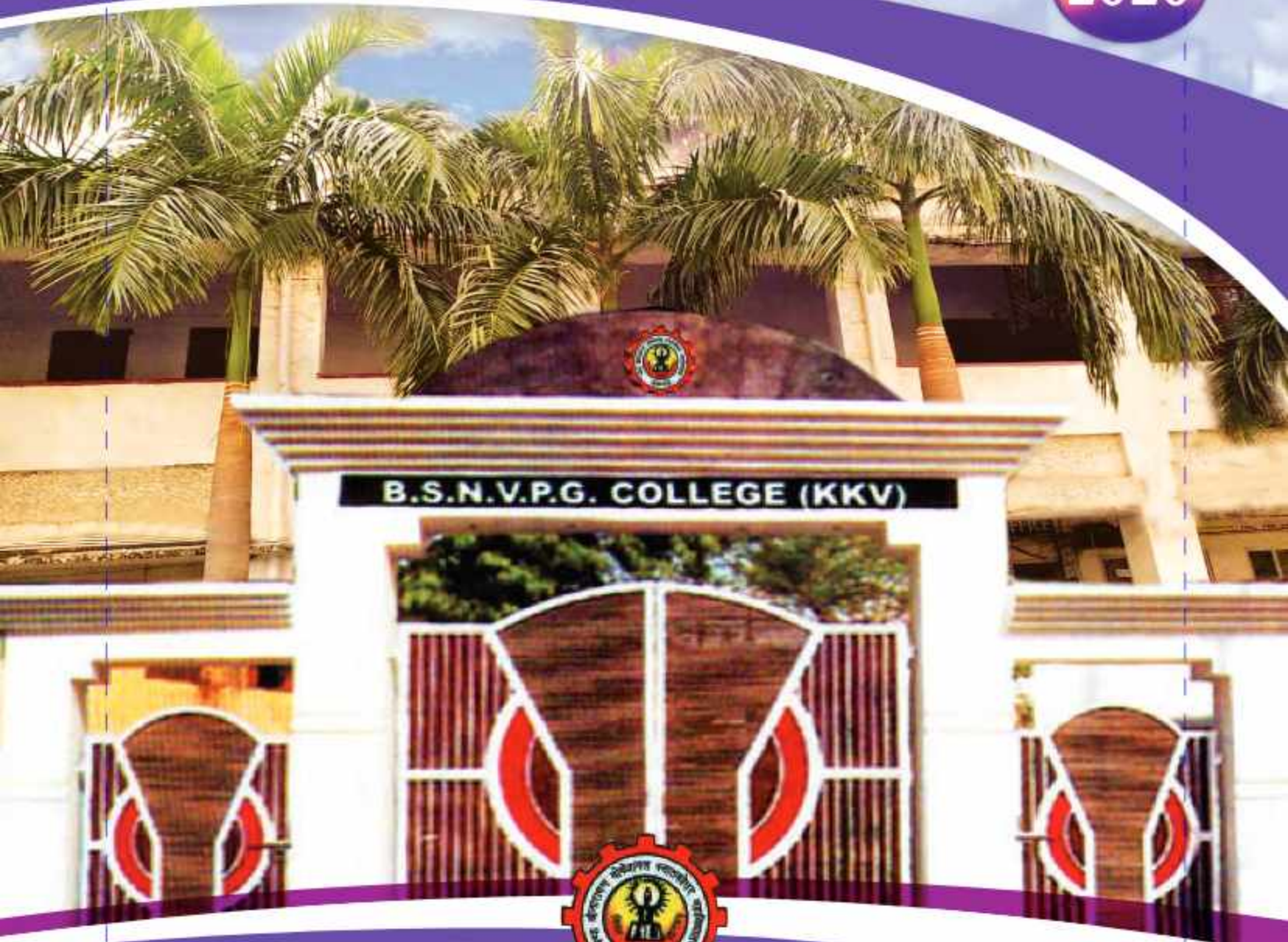


WEBINAR SOUVENIR

(A Compendium of Webinar Reports during COVID-19)

2020



**BAPPA SRI NARAIN VOCATIONAL P.G. COLLEGE
LUCKNOW**

NAAC ACCREDITED GRADE 'B'

E-mail : bsnvpvc1954@gmail.com | Ph. No. 0522-2635513

हे ! शिक्षा संवाहक महान सुति सरल वेश ।
तुम वर विशाल वट वृक्ष विशद छाया विशेष ।
हे ! अजर अमर अविराम कीर्ति अनुपम अशेष ।
तुम विद्या के संस्कार रूप यशकाय शेष ॥



महाविद्यालय के संस्थापक
स्मृतिशेष पं० श्रीनारायण मिश्र “बप्पा जी”



Bappa Sri Narain Vocational P.G. College Lucknow

NAAC Accredited Grade 'B'

WEBINAR SOUVENIR

Patrons

Shri T.N. Misra

President, Management Committee



Shri Ratnakar Shukla

Secretary / Manager, Management Committee



Chief Editor

Prof. Rakesh Chandra

Principal



Editors

Dr. Jyoti Kala

Dr. Manjul Trivedi

आनंदीबेन पटेल

राज्यपाल, उत्तर प्रदेश



सत्यमेव जयते

राज भवन

लखनऊ - 226 027

13 अक्टूबर, 2020

सन्देश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि बप्पा श्री नारायण वोकेशनल, महाविद्यालय, लखनऊ द्वारा एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यार्थियों के अन्दर जागरूकता तथा संस्कार जागृत करने का स्रोत पत्र-पत्रिकाएं होती हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय की स्मारिका में ऐसे महत्वपूर्ण विषयों एवं पाठ्य सामग्री का समावेश किया जायेगा, जो विद्यार्थियों के लिये उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक होगी।

स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन
(आनंदीबेन पटेल)

संख्या-५.७३१/CM-३/२०२०

योगी आदित्यनाथ



मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

लोक भवन,
लखनऊ - 226001

दिनांक : 22 OCT 2020

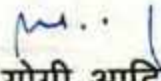


संदेश

हर्ष का विषय है कि बप्पा श्री नारायण वोकेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ के विभिन्न विभागों द्वारा लॉकडाउन अवधि में आयोजित वेबिनार पर केन्द्रित एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय का यह प्रयास सराहनीय है। मुझे आशा है कि स्मारिका के माध्यम से संस्थान के विद्यार्थियों को उपयोगी जानकारी प्राप्त होगी।

स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।


(योगी आदित्यनाथ)

डॉ० दिनेश शर्मा



उप मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश

99-100, विधान भवन,
लखनऊ

दिनांक: 18/11/2020



सन्देश

यह हर्ष का विषय है कि बप्पा श्री नारायण वोकेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चारबाग, लखनऊ द्वारा एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसमें कोविड-19 महामारी के कारण हुये लॉकडाउन की अवधि में आयोजित वेबिनारों में सम्मिलित विषय विशेषज्ञों द्वारा दिये गये व्याख्यान के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण जानकारीयों को संकलित कर प्रकाशित किया जायेगा

ऐसी स्मारिकायें न केवल महाविद्यालय की अकादमिक, सांस्कृतिक, खेलकूद आदि गतिविधियों का प्रतिबिम्ब होती है, बल्कि जन-जागरण एवं विचारों के माध्यम से सामाजिक समरसता के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन भी करती है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि उक्त स्मारिका के प्रकाशन से छात्र-छात्राओं की वैचारिक क्षमता एवं रचनाशीलता को गति प्राप्त होगी और उनकी विशिष्ट प्रतिभाओं को उभारने तथा सर्वांगीण विकास के लिये यह स्मारिका उपयोगी होगी।

स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

भवदीय,

(डॉ० दिनेश शर्मा)

श्री राकेश चन्द्र जी,
प्रधानाचार्य,
बप्पा श्री नारायण वोकेशनल महाविद्यालय,
लखनऊ।

प्रो. आलोक कुमार राय
कुलपति
Prof. Alok Kumar Rai
Vice-Chancellor

लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ-226007 (उ.प्र.) भारत
University of Lucknow
Lucknow-226007 (U.P.) India




संदेश

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी के आवाहन पर जनमानस की सुरक्षा हेतु किये गये राष्ट्रीय लॉकडाउन की अवधि में बप्पा श्री नारायण वोकेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ द्वारा कोविड-19 की भीषण महामारी के दौरान कम्प्यूटर तकनीकी का प्रयोग करते हुये वेबसाइट के माध्यम से महाविद्यालय के विभिन्न विभागों के अन्तर्गत अनेक विषयों में वेबिनारों का आयोजन किया गया और वेबिनारों के विचारों को संकलित कर लिपिबद्ध करते हुये एक स्मारिका का प्रकाशित की जा रही है, यह सराहनीय कार्य है। महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित स्मारिका का लाभ छात्र-छात्राओं, अध्यापकों के साथ ही साथ जनमानस के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करने में सहायक होगी।

महाविद्यालय की 'स्मारिका' के सफल प्रकाशन हेतु स्मारिका के सम्पादक—मण्डल, अध्यापकगण एवं समस्त छात्र-छात्राओं को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

05 नवम्बर, 2020


(प्रो० आलोक कुमार राय)



“हमारा उद्देश्य उत्कृष्टता, अनुशासन एवं समर्पण के द्वारा महाविद्यालय और राष्ट्र का उन्नयन करना”

बप्पा श्री नारायण वोकेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय (के०के०वी०)

स्टेशन रोड, चारबाग, लखनऊ

Sri. T.N. Misra

President



MESSAGE

It is a matter of great pride to learn that B.S.N.V. P.G. College is going to publish a collection of reports of webinars, organised on various relevant topics, during the lockdown to continue imparting knowledge to academicians, students, participants and teachers.

It is a matter of great satisfaction that the teachers have been enthusiastically engaged in conducting meaningful academic activities using the technical expertise.

I convey my blessings to all the organisers, participants and the editors of this volume and hope to see many more such events in the future.

T.N.MISRA



"हमारा उद्देश्य उत्कृष्टता, अनुशासन एवं समर्पण के द्वारा महाविद्यालय और राष्ट्र का उन्नयन करना"

बप्पा श्री नारायण वोक्शेनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय (के०के०वी०)

स्टेशन रोड, चारबाग, लखनऊ

Sri. Ratnakar Shukla

Secretary/Manager



MESSAGE

I am indeed happy to know that B.S.N.V. P.G. College, Lucknow has come up with the conduct of a number of online classes, upload of e-contents and organizing several online seminars. Due to the COVID-19 pandemic all of a sudden the academic activities were also locked down but in such a testing time the online learning medium served immensely to host the interactive and collaborative webinars. The platform made academically relevant acquisition of knowledge and information.

I congratulate the principal, organizers and teachers who contributed sincerely in the successful completion of these events and wish them all success for their future endeavours.

Ratnakar Shukla



"हमारा उद्देश्य उत्कृष्टता, अनुशासन एवं समर्पण के द्वारा महाविद्यालय और राष्ट्र का उन्नयन करना"

बप्पा श्री नारायण वोकेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय (के०के०वी०)

स्टेशन रोड, चारबाग, लखनऊ

Prof. Rakesh Chandra
Principal



MESSAGE

It gives me immense pleasure that the college is extensively engaged in Digital learning and teaching practices. The practice helped not only to ward off the sudden impedance in the offline teaching due to the unprecedented outbreak of COVID-19 pandemic but also kept the tradition of organizing seminars and conferences ongoing by organizing a number of Webinars on the topics of contemporary and timeless relevance. These webinars provided a large number of attendees with the live opportunity to listen to and interact with the renowned experts and learned academicians from national and international intelligentsia in real time. The webinars organized via Digital medium proved to be satisfactorily effective in keeping pace during the changed scenario of lockdown and pandemic halting almost all activities and posing a challenge to the teaching and learning communities.

I feel happy and contented in presenting the Webinar-Souvenir with intimation that in future also we will continue to explore every avenue on more relevant issues of academic and other important aspects and keep on facilitating in imparting knowledge, information and contemplation.

Prof. Rakesh Chandra



"हमारा उद्देश्य उत्कृष्टता, अनुशासन एवं समर्पण के द्वारा महाविद्यालय और राष्ट्र का उन्नयन करना"

बप्पा श्री नारायण वोकेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय (के०के०वी०)

स्टेशन रोड, चारबाग, लखनऊ

Dr. Jyoti Kala

Head

Associate Professor

Department of English



EDITORIAL

Dear Readers,

Bappa Sri Narain P.G. College, Lucknow, founded by the great visionary legend, Late Sri Pt. Sri Narain Misra (Bappa Ji), is known for imparting quality and value based education. Keeping pace with changing time and considering the growing impact of information and technology in Education the college has already started ITC based teaching. In the time of sudden impedance in offline classes due to the lockdown and social distancing practices owing to the havoc of unprecedented COVID-19 pandemic the practice proved to be immensely effective. Not only the teachers completed their courses through online teaching medium but they also avail themselves of acquiring and imparting relevant information and knowledge to others by organizing a number of webinars on varied topics effectively.

In present time when a big quantity of new and necessary information appears every day online medium has increasingly become an effective way not only related with supplementary but mainstream education as well. The teachers and learners started struggling hard with spectrums of tools and methods of educational technologies to cover pandemic restrictions and meet existing challenges. The faculty of our college also did not leave any space to contribute to academic development during this period and as a result the academia witnessed a series of Webinars offering intellectual discourse by involving distinguished speakers, dignitaries and a large number of attendees to make most of the endeavor, present effective conclusions and suggestions to help the future roadmap of action.

It is my humble privilege, on behalf of the college faculty, to present the compendium of reports of the Webinars through this Webinar Souvenir with my thanks and regards to Sri. T.N. Misra, President and Sri Ratnakar Shukla, Manager, Secretary of the Management Committee for their blessings, encouragement and guidance and also Sri. Rakesh Chandra, Principal of the college for his immense support.

Regards,

Dr. Jyoti Kala



National Webinar

PEDAGOGY OF TEACHING AND LEARNING AMIDST COVID 19 PANDEMIC

17th May 2020

Department of English

Bappa Shri Narayan Vocational Post Graduate College (KKV), Lucknow
(Accredited Grade 'B' by NAAC)
Department of English, Faculty of Arts
is organising a Webinar on the topic
“Pedagogy of teaching and learning amidst COVID-19 pandemic”
on 17th May 2020 at 1:00 pm

 Sri Rakesh Chandra Principal BSVPG College, Lucknow	 Guest Speaker Dr. Ritu Tripathi Chakravorty Teacher Educator Amity University Uttar Pradesh, Lucknow	 Coincisor Dr. Jyoti Kala Head, Dept. of English BSVPG College, Lucknow	 Co-Concisor Dr. Shobha Bapal Associate Professor Dept. of English BSVPG College, Lucknow	 Coordinator Dr. D.K. Gupta Associate Professor Dept. of Chemistry BSVPG College, Lucknow	 Organising Secretary Dr. Manjul Trivedi Assistant Professor Dept. of Education BSVPG College, Lucknow
---	--	--	--	--	---

Kindly register on the given link: <https://forms.gle/yfXnriatjRt8og8Y7>
The e-certificate of participation will be given to all attendee participants.
For any details you may contact: on 9369445558, 7275811888

Due to unprecedented outbreak of COVID-19 Pandemic and sudden stoppage of prevailing academic activities a dire need to opt an alternative teaching medium was felt on indisputably. All of sudden teachers across the country began struggling with the effective measures of online teaching. With a view to help, guide, promote and facilitate the teacher and learner community a webinar on the topic, “**Pedagogy of Teaching and Learning amidst COVID-19 Pandemic**” was organized by **Dr. Jyoti Kala**, head of the Department of English on 17th May 2020.

The guest speaker, **Dr. Ritu Tripathi Chakravorty**, Teacher Educator, Amity University, Lucknow mentioned about several key developments in online learning and how they impact our understanding of pedagogy. She elaborated the benefits of Digital learning by



emphasizing that the online teacher must use technology to enhance the course content. Many efforts are being made by both government and non-government organizations along with the various techno-companies to maintain the school coordination to make a smooth evolution to the virtual world. An effective online pedagogy is one that emphasizes student-centered learning and employs active learning process. This means helping students to manage knowledge - how to find, analyze, evaluate, and apply knowledge as it constantly shifts and grows. She also highlighted that the pandemic is likely to induce a global recession, and then demonstrable and certifiable skills will become key to securing and retaining work. The development of such skills requires active learning in rich and complex environments, with plenty of opportunities to develop, apply, assess and practice such skills. Student demographics have been changing for some considerable time. More students are combining work and study, more students looking for flexible learning options. Digital learning is becoming an important medium for acquiring knowledge and skill in such changing circumstances.

There was a great response to the event. More than two thousand participants registered for the event. Dr. Chakravorty's lecture was exceptionally welcomed by the participants. In her concluding remarks Dr Jyoti kala talked about the importance of virtual teaching and learning in present scenario and how it has gained unprecedented momentum. The session concluded with the vote of thanks extended by Dr. Jyoti Kala. She also expressed her gratitude to **Dr. D.K. Gupta, Dr. Manjul Trivedi and Dr. Manish Mishra** for their cooperation and support in conducting the webinar.





National Webinar

ROLE OF CHEMISTRY IN SANITIZATION AND PERSONAL HYGIENE IN CONTEXT OF COVID-19

19th May 2020

Department of Chemistry

B.S.N.V.P.G. College (KKV), Lucknow organized a national webinar on 19th May 2020. The topic of the Webinar was **“Role of Chemistry in sanitization and personal Hygiene in context of COVID-19”**. Sri T.N. Mishra, President of the Managing Committee, Sri Ratnakar Shukla, Manager and Sri Rakesh Chandra, Principal of B.S.N.V.P.G. College motivated us to organize this webinar. Six hundred teachers, Research Scholars and students registered themselves and approximately the same number of people participated in the webinar.

This webinar shed light on the problems created by COVID-19 pandemic, the importance of hygiene and sanitization and the role Chemistry can play to help combat these issues.



The guest speaker Dr. (Prof.) Naveen Khare, Head of the department of Chemistry, Lucknow university, a well known Chemist, delivered a lecture in which he discussed in detail the role of sanitization and personal hygiene in protecting us from the pandemic. He also discussed the utility of different chemicals in a very interesting manner, the upcoming challenges and their solution in detail.

Dr. Seema Joshi, Head of the department of Chemistry, I.T. College, Lucknow, Dr. D.K. Awasthi, Head of the department of Chemistry, J.N.P.G. College, Lucknow and Dr. Archana Dixit, a well known Chemist and Associate Professor also discussed the importance of recognizing the challenges faced by the people due to COVID-19 and role of the herbs in preventing the spread of this disease.

This webinar was organized on the zoom platform and was also live streamed on Youtube. Dr. G.K. Mishra, organising secretary, informed that inference drawn from this online discussion would be shared with different social organizations to inculcate good hygiene habits and spread awareness among the manners. Dr. Lalit Prakash Gupta collected questions from the participants and thanked them for accepting our invitation and attending the webinar. Later our Principal congratulated us on the success of the seminar which could not have been possible without the valuable contributions of Dr. D.K. Gupta, Coordinator, Sri Harish Pal, Co-convenor and Dr. L.P. Gupta, Co-coordinator along with the remaining members of the organizing committee.





International Webinar ECONOMIC DEVELOPMENT STRATEGIES POST COVID-19 PANDEMIC

30th-31st May 2020

Academic Development Committee



Bappa Sri Narain Vocational Post Graduate College (KKV), Lucknow
(Affiliated to the University of Lucknow, Lucknow)
(Accredited Grade 'B' by NAAC)

Academic Development Committee
invites you to an International Webinar on
Economic Development Strategies Post COVID-19 Pandemic
30-31 May 2020, 7:00 p.m. (IST)

						
Rakesh Chandra Principal	Prof. A.D.N. Bajpai Guest Speaker Prof. of Economics R.D.Jai., JBL, Former V.C. of H.P. Univ. Shimla A.P.S. Univ., M.P. M.G.C.G.V., M.P.	Dr. Pallavi Shukla Guest Speaker Research Fellow John's Hopkins University, US	Dr. Hemant S. Pullabhotla Guest Speaker Research Fellow Stanford University, US	Prof. A.K. Sengupta Guest Speaker Former Head, Deptt. of Economics, & Acting Pro VC, L.U. Luck	Prof. Sanjay Mehta Guest Speaker Head, Dept. of Business Administration Univ. of Lucknow	Dr. Jyoti Kala Convener Head, Dept. of English

Organizing Committee:
Dr. D.K. Srivastava, Dr. D.K. Gupta, Dr. Manjuli Trivedi, Dr. Lalit Prakash Gupta

The e-certificate of participation will be given to all attendee participants.
For any query you may contact on : 9369445558, 7275811888

The two day international Webinar on the topic “Economic Development Strategies post COVID-19 pandemic” was organized by the Academic Development committee on 30th -31st May 2020. On the first day of the webinar the convener **Dr. Jyoti Kala** welcomed **Prof. A.D.N. Bajpai**, Former VC, Himachal Pradesh University, Shimla, A.P.S. University, Madhya Pradesh and M.G.C.G.V., Madhya Pradesh, Guest Speakers **Dr. Pallavi Shukla**, John Hopkin's University, US and **Dr. Hemant Pullabhotia**, Standford University, US. First of all she mentioned about the academic, administrative and creative contribution and credentials of Professor A.D.N. Bajpai and invited him to deliver his expert lecture. Professor Bajpai gave an insight into the effectiveness and utility of a parallel economy from both the capitalist and the



communist perspectives. The pandemic has triggered an onslaught of bad news for global sustainable development. India's current growth prospects are highly constrained as it has entered the COVID-19 crisis on the back of an economic down slide. The extent of the crisis doesn't change the underlying urgency of ending extreme poverty, stopping climate change and building inclusive societies. The resumption of activities needs to be according to a well-thought out exit strategy. In terms of rebooting the economy, new manufacturing capacity needs to be attracted in India which would require additional budgetary allocation. He also emphasized on Infrastructure investments as they are an effective way to boost economic activity and create jobs. Proper attention is to be focused on strengthening the local economic prospects for self-reliance.

Dr. Pallavi Shukla, John Hopkin's University, US gave her lecture on the topic **Lessons from a Pandemic to Re-structure India's Agricultural Policy**. She projected the three main problems of climate change, malnutrition and slow growth in the agricultural economic sector. All these three problems have been intensified due to COVID-19. One of the key challenges in the Indian farm sector is the inability of the farmer to get a reasonable price for his produce. For long, the central and the state governments have a mechanism of minimum support price (MSP) or a floor procurement price for agricultural commodities to provide income security to the farmers. She advised to give priority to producing Climate resistant crop like millet and buying from local small shops.

Dr. Hemant Pullabhotia, Standford University, US gave his lecture on the topic **Redesigning Economic Safety Nets for the Post-Covid recovery**. He told about the protection programs for the recovery from the loss occurred due to COVID-19 pandemic. He posits the problem of the migrant workers. More than 90% laborers are working in formal sectors thus unable to avail benefits of labor protection laws. Government should pay more attention on these major safety programs as PDS, ICDS, MDMS, MGNREGS, PENSIONS, AYUSHMAN BHARAT. Government should also have a backup program for coping up with these kinds of unprecedented pandemic and disastrous situation.

The second day of the webinar began with the enlightening lecture **“COVID-19 Implications for the Indian Economy”** by **Professor A.K. Sengupta**, Former Pro VC, University of Lucknow. He said that the government should support and boost up economy. Government has announced packages for agriculture and MSME. He also highlighted the need to analyze weather funding from state government or central government would be supportive



or beneficial. He cautioned about the challenge of rising back those people above poverty line who would fall below poverty line due to pandemic.

Prof. Sanjai Medhavi, Head, Dept. of Business Administration, LU, Lucknow pointed out about the loss of faith in the migrated laborers and anticipated short of labor in the metropolitan states like Gujrat and Maharatsra and how in the states like U.P and Bihar where there is surplus of labor the technology and AI based production will enhance their unemployment. Industry will input more capital for more technology and artificial intelligence based production. So the future cores of industrial development should center on local industry near the customers and also employing local labours in the production.

The webinar concluded with the vote of thanks extended by the principal, Sri Rakesh Chandra, to the distinguished guest speakers. The webinar was extensively attended by a large number of attendees from the country and abroad.





National Webinar

LEARNING OPPORTUNITIES DURING CORONA PANDEMIC

10th June 2020

Department of Physics

The poster is for a national webinar organized by the Academic Development Committee of Bappa Sri Narain Vocational Post Graduate College (KKV), Lucknow. It features a central title and date, surrounded by portraits and names of guest speakers and organizers. The background is a vibrant mix of orange, red, and blue.

Bappa Sri Narain Vocational Post Graduate College (KKV), Lucknow
(Affiliated to the University of Lucknow, Lucknow)
(Accredited Grade "B" by NAAC)

Academic Development Committee

invite you to a national webinar on
"Learning Opportunities During Corona Pandemic"
10 June 2020 at 10:00pm

GUEST SPEAKERS:

- Rakesh chandra**
Principal, BSNV
PG college lko
- PROFF. RAM KRISHNA THAKUR**
AMITY UNIVERSITY
- Dr. Sulendra Kumar Singh**
career counsellor & trainer
- Dr. Chaitanya Patel**
Assistant professor
Department of hearing
impairment faculty
of special education
Dr. shakuntala
mishra national
rehabilitation
University moham
mad lko
- DR. R. K. TIWARI** HEAD
DEPARTMENT OF PHYSICS
BSNV PG COLLEGE LKO
- Dr. Anurag Mishra**
BSC, lko
- Dr. Sankalp Verma**
Sankalp verma

Organizing committee- Shinee, Shubham kumar, Sankalp
srivastava, Purnima Gupta, Sakshi dixit, Swati thakur and you

**For any query you may contact:- 7310208748, 9415755950,
6394659089**

A national webinar on the topic "Learning Opportunities During Corona Pandemic" was organized by Physics Association, Department of Physics, Bappa Sri Narain Vocational Post Graduate College (KKV) on 10th June, 2020.



Clarifying the outline of the theme of the webinar, webinar convener, Dr. Ram Kumar Tiwari said that during the present time of COVID-19 pandemic the educational institutions are closed and academic activities are expected to suffer the most. Therefore, there is a need to explore other opportunities of learning. Outlining the importance of the webinar he thanked students who are really behind this webinar.

The webinar was presided over by Prof. Ram Krishna Thakur, Dean, GD Goenka University who spoke about "ICT based learning practices". He explained importance of ICT based learning and way to make it convenient and safer for both the students and teachers.

Dr. Satendra Kumar Singh, Career Counselor & Trainer, delivered his lecture on "Learning Opportunities". He shared various links and examples with participants for online learning. Dr. Chet Narayan Patel from Dr. Shakuntala Mishra National Rehabilitation University, emphasized on "Learning Methods".

On this occasion, the chairman of the managing committee of the college, Mr. T.N. Misra described the topic of the seminar as very important and the forth coming time tough for learning activities. Mr. Misra also discussed the educational activities of the college by referring to the achievements of college students.

Addressing the webinar, the manager of the college, Mr. Ratnakar Shukla thanked the convener of the seminar, Dr. Ram Kumar Tiwari, for organizing the seminar on such an important subject. Shri Shukla also discussed the importance and uses of online education.

The Principal of the college, Shri Rakesh Chandra described the topic of the seminar as particularly relevant. Shri Rakesh Chandra also expressed the hope that outcomes of the webinar will help both students and teachers to formulate a way for educational activities during COVID-19 pandemic. Along with this, the principal also thanked all the guests who attended the seminar.

On this occasion, teachers of different universities, colleges and large number of students were present.





National Webinar

REFRAMING THOUGHTS AND MAKING YOURSELF HAPPIER: STRATEGIES TO BUILD PRODUCTIVE CAREER DURING AND AFTER PANDEMIC

14th June 2020

Department of Commerce

Bappa Sri Narain Vocational P.G. College(K.K.V.), Lucknow
(Accredited Grade 'B' By NAAC)
Department of Commerce
organising a National Webinar on the Topic
**" Reframing Thoughts & Making Yourself Happier: Strategies to
Build Productive Career During & After Pandemic"**
on 14th JUNE, Sunday at 12:30 pm

 Principal Sir Rakesh Chandra B.S.N.V.P.G. College Lucknow	 Secretary Prof. M. K. Agarwal Department of Economics Lucknow University	 Convener Dr. Madhu Bhatia Head Dept. of Commerce B.S.N.V.P.G. College Lucknow	 Co-convener Dr. D.D. Mishra Dept. of Commerce B.S.N.V.P.G. College Lucknow	 Co-ordinator Dr. D. K. Gupta Dept. of Chemistry B.S.N.V.P.G. College Lucknow	 Organising Secretary Dr. Rajiv Srivastava Dept. of Commerce B.S.N.V.P.G. College Lucknow	 Guest of Honor Dr. Preeti Pandey Dept. of Commerce B.S.N.V.P.G. College Lucknow
--	---	--	--	--	--	---

kindly register on the given link: <https://forms.gle/2GzwWCWQW1bFKwVt8>
The e-certificate of the participation will be given to all the attendee participants
For any Queries Please Contact on: 9453301936, 9026505937
Technical Administrator : Shashank Kashyap
Contact: 9555542764

A vibrant webinar on "Reframing Thoughts and Making Yourself Happier: Strategies to Build Productive Career During and After Pandemic" was organised by the Department of Commerce, B.S.N.V.P.G. College on June 14, 2020 under the infallible guidance of Dr. Madhu Bhatia, the convener of the webinar. Approximately 760 participants from teaching fraternity, academicians, research scholars and students participated in the webinar through Zoom and YouTube channel with the help of technical support given by Dr. D. K. Gupta, Co-ordinator and Dr. D.D. Mishra, Co-convener. The organising secretary and comparer of the webinar Dr. Rajiv Srivastava formally started the webinar by welcoming Principal Sir, all the esteemed guests, teachers from other colleges and universities, colleagues and all the participants. The program was then officially started with the blessing from the Principal Mr. Rakesh Chandra who welcomed the chief guest of the occasion and extended his



good wishes for the success of the webinar. The theme of the webinar was introduced by the Convenor, Dr. Madhu Bhatia, Head, Department of Commerce, BSNVPG College. Dr. Bhatia explained the objectives of the webinar which was to indulge the participants in some productive activities and to release their stress during the crisis period. She drew the attendee's attention towards the increasing adverse effects of COVID-19 and how the current youth is facing the problems of stress and anxiety. The keynote speaker Prof. M. K. Agarwal, O.S.D., IMS Lucknow University made it a dynamic session by citing examples from his personal life. He encouraged the students and told them the secrets to success. He laid emphasis on choosing the right direction with proper strategy and positive attitude for the attainment of goals. Self assessment is the key to achieve success. He motivated the participants to do their self assessment because a person himself has the best ability to judge his own strengths, weaknesses, opportunities and threats. Prof. Agarwal motivated the students and showed them the correct way of choosing a path when you stand on a crossroad. He talked about the perspectives of happiness. He had a general view that the parameter of happiness varies from person to person. He raised some simple questions like 'Are you happy?' 'Are you satisfied?' during his deliberation and asked the students to find answers to these questions. He further added that the answers to these questions will help a person to take right decision and stand strong during the ups and downs in life. COVID pandemic should be taken as an opportunity and they should explore their career options. Dr. Preeti Pant, the co-coordinator of the webinar made it interactive by taking up the question answer session. Dr. Pant made the whole session very interactive by raising all the relevant questions asked by the participants. The vote of thanks was delivered by Dr. Madhu Bhatia and the summary report and learning outcomes from the webinar was presented by Dr. Rajiv Srivastava. The webinar was closed by Dr. D.K. Gupta. Overall the webinar proved to be a fruitful session with positive outcomes for all.





National Webinar

NATIONAL WEBINAR ON THE IMPACT OF PANDEMIC ON GEOLOGICAL FIELD STUDIES

19th Aug 2020

Department of Geology

Webinar
Impact of Pandemic on Geological field studies
On 19 August, 2020 at 11 am

Dr. Shishir Srivastava
Dy. Director General, GSI

Dr. S.K. Kulshrestha
Former Prof. Punjab University

Prof. Vibhuti Rai
Former Head, Department of Geology, IIT

Dr. Sanjay Shukla
Head, Department of Geology

Sri Rakesh Chandra
Principal

Dr. Ram. Kumar
Head, Department of Physics

BSNV PG College, Lucknow.
Department of Geology

National webinar on “**The Impact of Pandemic on Geological Field Studies**” was organized by Geology Department of college on 19th August 2020. The welcome of the guest speakers and introduction of the webinar theme was done by Dr. Sanjay Shukla. Geology is a field science and its study is not confined to classroom and labs. The geological field studies are an integral part of geology syllabus as it is important to understand the rocks in their natural environment and their relationship to one another. The study of structure, surface and subsurface features of Earth are based on one’s observations and interpretations by learning the uses of tools and techniques of geological mapping and preparation of cross sections. Under the present Pandemic conditions, traveling out of town for the field work, with a group of students is risky and not advisable. To get a feedback in this regard from geology academia and administrators, this webinar was organized.

The topic of the webinar is very relevant and concerned with the geology fraternity,



students, their parent/guardians and the society. In prevailing pandemic condition to discuss this problem we invited following speakers.

1. Dr. Shishir Srivastava, former Dy. Director General, Geological Survey of India, Northern Region. Dr. Srivastava is a reputed geologist, had done M.Sc. and Ph.D. from Lucknow University. Before joining the GSI in 1977, he has also served Indian Bureau of Mines (IBM). He has been involved in geological and geomorphological mapping, Base metal (Platinum and Gold) investigation, Environmental studies of parts of Rajasthan, Meghalaya, Assam, UP, HP and Andhra Pradesh. In Addition to conventional methods Dr. Srivastava also used advance Photo geology and Remote Sensing techniques for augmentation and innovations.

2. Prof. Vibhuti Rai, former Head of Geology Department and Chairman, Research Council, University of Lucknow, Director Petroleum Technology and Management, Director, B. Voc. (Gemmology) Programme, LU.

He has completed 16 major Research projects of various National Agencies including CSIR, DST, UDC, CST-UP, Wadia Institute of Himalayan Geology, Atomic Mineral Division and ISRO. He has also organized Three International Geological Correlation projects as Project Leader under IUGS-United Nations Programme (UNESCO).

3. Prof. S.K. Kulshrestha, former Professor of Geology in Punjab University, Chandigarh, well-known Palaeontologist and a versatile teacher with more than four decades of geology teaching and field experience. We are fortunate to be associated with such professor for more than ten years.

The experts' opinion/suggestions

The learned speakers put forward their views regarding the present problem which can be summarised as following :

The pandemic has variously interrupted the human activities restricting the employees/workers to online work. But unlike the other physical sciences, Geoscientists observe the evidences that are result of earth processes taking for the millions or billions year in the past. In field students come across the features in their natural form, their association with other rock types, fossils, structures by walking over the rock, touching the rocks, feeling it, hammering it, listening the sound of hammer etc. are required to develop understanding with the subject.

Following the guidelines issued by the Government regarding the safety of citizens, the organization of the field trips with maintaining proper distance during journeys by railways or buses, finding clean sanitised and sufficient accommodation, food arrangement, sanitisation of equipments, local transport, medical facility etc. that too in our budget, seems to be not possible in near future.



Live field work from selected outcrops on Google meet or similar platforms, making videos of field by faculties/Earth scientists, Landscape analyses using Google earth based streaming and recording, Drone based survey and field training, 3-D remotely sensed data based study are the other options if resources are available, but the feeling or acclimatisation with field environment has its own value because data generated by field work is vital and indispensable.

The webinar has immediate relevance to one of the numerous problems created by the Pandemic which is still raging without any certainty regarding the vaccine or its cure in near future.

The Geomorphologic studies of already mapped area, Change detection of catastrophically disturbed area, like landslide, earthquakes, change in drainage pattern of rivers, Anthropogenic activities like urban expansion, deforestation, land degradation, urban water logging, erosion and banks failure, drainage pattern anomaly etc. could be done.

Means for carrying out these studies are readily available. Collection of the data/information provided by the following tools has the potential to help us achieve our present objectives-

1. TOPOGRAPHIC MAPS of area provide high precision altitude data and cultural information which are dated.
2. GEOCODED IMAGERY provides multi-temporal and (nearly) real time data but lacks altitude data and cultural information like place, names etc.
3. DIGITAL IMAGE DATA if freely available from Google Earth etc. It can be used to create DEM (Digital Elevation Model) to visualize the terrain in three dimensions.

For organising any academic event the encouragement by College management and administration is very important. Sri T.N. Misra ji, President, Sri Ratnakar Shukla ji, Secretary/ Manager of college managing committee, Rakesh Chandra ji principal, are always very supportive and helping. Dr. Ram Kumar Tewari, Head of Physics Department is a big technical and moral support in organising this event amid pandemic period.

Mr. Ankit Pandey, Mr. Abhishek Shukla, Dr. Sanjive Shukla, Dr. K.K. Bajpai, Dr. NK Misra, Dr. DK Gupta and many other faculty members have joined to share views and suggest some way out.

A large number of professors, geoscientists and students from GSI, Wadia institute of Himalayan Geology, Dehradun, BSIP, BHU, HNB University, Srinagar, Garhwal, Universities of Lucknow, Allahabad, Agra, Gwalior, Kumaon, Sagar, Mumbai, Jodhpur, Udaipur and Kerala etc also got connected and participated in this webinar.





राष्ट्रीय वेबिनार

अन्तर्जालीयम् अन्तराष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलनम् 'संस्कृतस्य महत्त्वम्'

21 अगस्त 2020

संस्कृत विभाग

उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थानम्
बप्पा श्रीनारायणवोकेशनलमहाविद्यालय,
लखनऊ-२२००२५
अन्तर्जालीयम् अन्तराष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलनम्
संस्कृतस्य महत्त्वम्
२१-०८-२०२०, शुक्रवारः, सांयाह १:०० - ३:००

डॉ० राजेन्द्रकुमार तिवारी
 अध्यक्ष
 उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

डॉ० श्यामल मिश्र
 उपाध्यक्ष
 उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

डॉ० श्रीहरिशंकर द्विवेदी
 अध्यक्ष
 उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

डॉ० श्रीहरिशंकर द्विवेदी
 अध्यक्ष
 उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

अन्तराष्ट्रीयसत्रम्
अध्यक्षता : डॉ० वाचस्पति मिश्र
अध्यक्ष : उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

डॉ० वाचस्पति मिश्र
 अध्यक्ष
 उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

डॉ० श्यामल मिश्र
 उपाध्यक्ष
 उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

डॉ० श्रीहरिशंकर द्विवेदी
 अध्यक्ष
 उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

अतिथयः

डॉ० श्यामल मिश्र
 अध्यक्ष
 उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

डॉ० श्रीहरिशंकर द्विवेदी
 अध्यक्ष
 उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

अध्यक्षता : डॉ० वाचस्पति मिश्र
अध्यक्ष : उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

अध्यक्षता : डॉ० वाचस्पति मिश्र
अध्यक्ष : उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

अध्यक्षता : डॉ० वाचस्पति मिश्र
अध्यक्ष : उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

अध्यक्षता : डॉ० वाचस्पति मिश्र
अध्यक्ष : उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ

दिनांक 21 अगस्त, 2020 दिन शुक्रवार, अपराह्न 1:00-3:00 बजे उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ एवं बप्पा श्री नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में “संस्कृतस्य महत्त्वम्” विषय पर अन्तर्जालीय अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ दक्षिण अफ्रीका के संस्कृत छात्रों द्वारा वैदिक मङ्गलाचरण से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० वाचस्पति मिश्र अध्यक्ष, उ०प्र० संस्कृत संस्थानम्, लखनऊ द्वारा की गयी।

इस अन्तराष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलन के मुख्य अतिथि के रूप में श्री राजेन्द्र कुमार तिवारी, आई०ए०एस०, मुख्य सचिव, उ०प्र० शासन, लखनऊ रहे। मुख्य वक्ता के रूप में संस्कृत के अन्तराष्ट्रीय विद्वान् राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम्, नयी दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रोफेसर (डॉ०) राधावल्लभ त्रिपाठी जी ने व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में संस्कृतज्ञ डॉ० शिवाकान्त द्विवेदी, आई.ए.एस., उपाध्यक्ष, लखनऊ विकास प्राधिकरण ने धारा प्रवाह संस्कृत भाषा में संस्कृत विशेष के



क्षेत्र में हो रहे कार्यों की चर्चा की।

विशिष्ट अतिथि के सानिध्य में संस्कृत के परम् विद्वान् आई०ए०एस० (डॉ०) ब्रह्मदेवराम तिवारी जी ने अपना अनुभव व्यक्त किया। अन्य विद्वान् के रूप में श्री कृष्ण पारीक, आई०ए०एस० जयपुर (राजस्थान) ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम का महत्व बढ़ाया।

विशिष्ट सत्र के द्वितीय चरण के मुख्यवक्ता के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध ज्योतिष के विद्वान् डॉ० चन्द्रमौलि उपाध्याय, प्रोफेसर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी रहे।

डरबन विश्वविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका के संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष रहे प्रोफेसर राम विलास जी ने विदेश में संस्कृत भाषा के उन्नयन हेतु जो कार्य हो रहा है, उस प्रतिष्ठित कार्य में लगे हुये लोगों के बारे में मुख्य वक्तृत्व से लाभान्वित किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफेसर नरसिंह चरण पण्डा जी जो कि सिल्पाकॉर्न विश्वविद्यालय, थाईलैण्ड में संस्कृत अध्ययन केन्द्र के विजिटिंग प्रोफेसर हैं, ने बृहद् रूप से संस्कृत के महत्व एवं संस्कृत आधुनिक काल में छात्रों के लिए कैसे उपयोगी व रोजगार परक है, पर प्रकाश डाला।

विशिष्ट अतिथि के सानिध्य में श्री नरदेव आचार्य यजुर्वेदी वैदिक प्रवक्ता हालैण्ड तथा डॉ० संजय शास्त्री, सांख्य-योग व्याख्याता, कनाडा से उपस्थिति रहे। आभार ज्ञापन हेतु बप्पा श्री नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय के सचिव/प्रबन्धक परम सम्माननीय श्री रत्नाकर शुक्ल जी व महाविद्यालय के प्राचार्य श्री राकेश चन्द्र जी ने सहभागिता की। कार्यक्रम में लगभग 100 से अधिक विश्वविद्यालयों एवं विश्व के विभिन्न देशों के 1200 लोग सहभागी बने।





National Webinar






MITIGATION AND ADAPTATION STRATEGIES FOR ALLEVIATING IMPACT OF CLIMATE CHANGE ON FOOD SECURITY

25th Aug 2020

Department of Botany

BAPPA SRI NARAYAN VOCATIONAL P.G. COLLEGE (KKV)
बप्पा श्री नारायण लोकेशनल पी.जी. कॉलेज (केकेवी)
NAAC ACCREDITED 'B' INSTITUTION

Department of Botany
is organizing a National Webinar on
"Mitigation and Adaptation Strategies for Alleviating Impact of Climate Change on Food Security"
on 25th August, Tuesday at 11:00 a.m.

				
Keynote Speaker Dr. T.K. Srivastava Principal Scientist ICAR-IISR Lucknow	Patron Sri. Rakesh Chandra Principal B.S.N.V.P.G. College Lucknow	Convenor Smt. Rashmi Gupta Associate Professor B.S.N.V.P.G. College Lucknow	Coordinator Smt. Sajni Misra Associate Professor B.S.N.V.P.G. College Lucknow	Organizing Secretary Mr. Lallan Prasad Assistant Professor B.S.N.V.P.G. College Lucknow

CLICK HERE TO REGISTER
for the FREE webinar
e-Certificate of Participation will be given to all the attendees
For any queries, Please contact: 9450653910, 9450436999
Technical Administrator: Shashank Kashyap

A National Webinar on "Mitigation and Adaptation Strategies for Alleviating the Impact of Climate Change on Food Security" was organised by the Department of Botany, Bappa Sri Narayan Vocational P.G. College Lucknow on Tuesday, the 25th August 2020. In this webinar, more than 950 participants from India and abroad were registered. The program was convened by Mrs. Rashmi Gupta, Associate Professor. The webinar started with virtual Deep Prajwalan and Saraswati Vandana. Mrs. Rashmi Gupta, the convenor of the webinar welcomed all the dignitaries and the participants. In her introductory remarks, she briefly explained the relevance of the topic of the webinar. She mentioned that the impacts of climate change are global in scope and unprecedented in scale. Without drastic action today, adapting to these impacts in the future will be more difficult and costly. She also talked about food security and



said that it is one of the leading concerns associated with climate change. Climate change affects food security in complex ways and can cause great social and economic consequences in the form of reduced incomes, eroded livelihoods, trade disruptions and adverse health impacts.

The inauguration ceremony was presided over by Mr. T.N. Misra, president of the college. In his presidential address, Mr. Mishra mentioned that over exploitation of natural resources by ever increasing population increased the emission of greenhouse gases which in turn deteriorated the climate significantly. He also enumerated various adverse effects of climate change on day to day life of human beings. Apart from the registered delegates, the inaugural function of the webinar was also graced with the presence of Mr. Ratnakar Shukla, Manager/secretory, Mr. Rakesh Chandra, Principal of the college.

Mrs. Sajni Misra, Coordinator of the webinar elaborated the theme in the present context and introduced the keynote speaker Dr. T.K. Srivastava, Principal Scientist, ICAR— Indian Institute of Sugarcane Research, Lucknow. In his keynote lecture, Dr. Srivastava informed about the measures to be taken to overcome the negative impact of climate change on food security. He also mentioned that agriculture comprising farming, forestry and fisheries has seen tremendous progress in India since the advent of Green Revolution. However, with the ever-increasing population, rapid urbanization and growing consumerism the natural resources needed to support the growth trajectory which has now started showing fatigue, exacerbated by the changing climate. Owing to conspicuous increase in global temperature up to 0.96 degree Celsius and atmospheric CO₂ to 415 ppm as compared with pre-industrial era concentration of 300 ppm, there has been wide fluctuations in annual weather all across the globe. As a result, extreme weather conditions like scanty rains, flash floods, cloud burst and frequent cyclones are increasingly witnessed in different regions of the world. Rising temperature and deficit soil moisture conditions often hinder normal crop growth. There is a change in pest and disease dynamics due to weather variability causing unexpected damage to crops, animals and fishery components. Bringing resilience i.e. capacity to absorb the shocks is pivotal for adaptation to such conditions. Climate smart agriculture based on examining and addressing bio-physical, economic and social domains for the risk and vulnerability holds the key for sustainable growth of agriculture, development of adaptation and mitigation of greenhouse gas emission. Measures like quality seed production and availability, adaptation of drought and water logging, tolerance varieties, water and nutrient efficient agronomy, input credit availability and insurance against damages need to be put in place for making Indian agriculture climate



resilient and more remunerative. This will further help in conservation of natural resources and efficient use of farm resources leading to enhanced farm production and income to ensure food security of masses. All these issues were discussed in detail by Dr. Srivastava. He also emphasized on development of village level seed banks. At the end of the keynote lecture, question-answer session was convened by Mr. Lallan Prasad, Organizing Secretary, to address the queries of the participants. This session received an overwhelmed response from the participants. The webinar concluded with the vote of thanks by Mrs. Rashmi Gupta to the dignitaries and the participants.





National Webinar

ORGANISMIC INTERRELATIONSHIP: THE RECENT FRONTIER OF BIOLOGICAL SCIENCES

29th Aug 2020

Department of Zoology

 **B.S.N.V. P.G. COLLEGE (KVV), LUCKNOW**
(Associated to the University of Lucknow, Lucknow)
(Accredited grade 'B' by NAAC)

POST-GRADUATE DEPARTMENT OF ZOOLOGY
is organizing a NATIONAL WEBINAR on
"ORGANISMIC INTERRELATIONSHIP: RECENT FRONTIERS IN BIOLOGICAL SCIENCES"
Date: 29th August, 2020 (Saturday)
Time: 11:00 a.m. onwards

Chief Patron: Shri T.N. Mishra, President, B.S.N.V. Institute
Patron: Shri Ratnakar Shukla, Manager/Secretary, B.S.N.V.P.G. College
Co-Patron: Shri Rakesh Chandra, Principal
Co-ordinator: Dr. Sanjeev Shukla, Associate Professor
Convener: Dr. Veena P. Swami, Associate Professor & Head
Co-convenor: Dr. Ashok Kumar, Assistant Professor
Organizing Secretary: Dr. Amrita Singh, Assistant Professor

Organizing Committee:
Dr. Anand Kumar
Dr. Barnister Kumar Gupta
Dr. Shashi Kant Shukla
Dr. Tabrez Ahmed
Miss. Ankita Srivastava
Dr. Vivek Kumar Dixit
Mr. Vivek Dwivedi

Resource Persons:
Prof. Nirupama Agrawal
Ex-Head, Department of Zoology and Former Dean, Faculty of Science, University of Lucknow
Ex-Sectional President, Indian Science Congress, Kolkata
Asutosh Mookerjee Fellow, 2020-2021 (The Indian Science Congress Association)
Dr. A. K. Tripathi
Ex-Chief Scientist CIMAP, Lucknow
Member of DBT Task Force Committee (Biopesticides & Biofertilizers)
Department of Biotechnology, Ministry of Science and Technology, New Delhi
Consultant, Institute of Pesticides Formulation Technology, Ministry of Agriculture, Gurugram

CLICK HERE TO REGISTER FOR THE NATIONAL WEBINAR
e-Certificate will be provided to all the attendees

On such auspicious day, Post Graduate Department of Zoology, B.S.N.V. P.G. College, Lucknow organized a national webinar on the theme **"Organismic Interrelationship: The recent frontier of biological sciences"** which was inaugurated by Shri T. N. Mishra, President, B. S. N. V. Institute, Lucknow.

Dr. Veena P. Swamy, convener, Head of the Department of Zoology, started the webinar on scheduled time and organized the webinar successfully. The theme of the topic was emphatically explained by Dr. Sanjeev Shukla (Ex. Head), who correlated the theme with Organismic relationship. In the case of Corona pandemic situations he also pointed out the importance of insects to fulfilment of food security issues.

The theme of webinar much suited to current scenario and the outcomes of the webinar



was published by different reputed national and local newspapers. Through the webinar students/scholars came to know about the different aspects about parasites-host relationship, their modes of interaction, their actions on different hosts and intensity of zoonotic pathogenicity. In context to Blue revolution for the socio-economic betterment of mankind helminths are more significant because of its infestation to Aquatic animals and affect on aquaculture systems. The Parasites don't affect common Indian people especially Fish farmers/catchers due to its small microscopic size. Hence as per the "WHO" the diseases caused by the larva forms of parasite comes under Neglected Zoonotic. The PG department of Zoology was overwhelmed and thankful for their informative presentation. The keynote speaker Prof. Nirupama Aggarwal, former head of the Department of Zoology, University of Lucknow discussed on the present scenario and research work done in India and across the world on Helminths, especially monogeneoidea Trematodes and their larval forms. He also informed that in the year 2021, the Department of Zoology of Lucknow University has hosted the sixth International Seminar on Monogenea, a proud occasion for the Department or Zoology.

In this sequence, A.K. Tripathi, former Chief Scientist of CIMAP, explained in detail the economic importance of bees and the products derived from them. Mr. Ratnakar Shukla ji, College Secretary/Manager, also gave his views and blessings for the success of webinar. Principal, Shri Rakesh Chandra Ji also shared his views on the subject. About 500 scientists, teachers and students of M.Sc. and B.Sc. participated in this webinar including Dr. Shailendra Singh of the University of Zambia, West Africa. As per Lucknow University curriculum/syllabus for M.Sc. final year students especially who opted Parasitology and Entomology as specialization paper, the webinar gave a lot of useful information.

At the end, Dr. Amrita Singh thanked to everyone. On this occasion, the teachers of the department- Dr. Anand Kumar, Dr. Barrister Kumar Gupta, Dr. Shashi Kant Shukla, Dr. Tabrez Ahmed, Ankita Shrivastava, Dr. Vivek Dixit, Vivek Divedi and hundreds of teachers of the other colleges were present.

★ ★ ★



राष्ट्रीय वेबिनार

हिंदी साहित्य में चित्रित प्राकृतिक आपदा कारण और निवारण

31 अगस्त 2020

हिंदी विभाग

 **बप्पा श्री नारायण वोक्शनल पी. जी. कॉलेज, (के. के. वी.)**
NAAC ACCREDITED 'B' INSTITUTION
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार
"हिंदी साहित्य में चित्रित प्राकृतिक आपदा:- कारण और निवारण"
31 अगस्त, सोमवार 2020 समय- सुबह 11 बजे

						
अध्यक्ष प्रो. प्रियंकर मिश्र भुवनेश्वर विश्वविद्यालय म. राधे ज. हिंदी वि. वर्ग	मुख्य वक्ता प्रो. वाई.के. सिंह विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ	अतिथि वक्ता प्रो. अखिलेश कुमार दुबे आचार्य एवं आकाशिक निदेशक क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज, म. राधे ज. हिंदी वि. वर्ग	संरक्षक प्रो. राकेश चंद्र आचार्य बी.एस.एन.वी. पी.जी. कॉलेज लखनऊ	संयोजक डॉ. प्रणव कुमार मिश्र विभागाध्यक्ष स्नातकोत्तर हिंदी विभाग बी.एस.एन.वी.पी.जी. कॉलेज लखनऊ	अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार सिंह एम्प्लॉयड प्रोफेसर हिंदी विभाग बी.एस.एन.वी.पी.जी. कॉलेज लखनऊ	सह संयोजक डॉ. अजय कुमार अति. प्रोफेसर स्नातकोत्तर हिंदी विभाग बी.एस.एन.वी.पी.जी. कॉलेज लखनऊ

आयोजक मंडल
श्री डी. के. राय, श्री के. सी. चौरसिया,
डॉ. सी. एम. शर्मा

वेबिनार लिंक: <https://meet.google.com/zwc-cpmx-isn>

दिनांक 31/08/2020 को बी.एस.एन.वी. पी.जी. कॉलेज के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग द्वारा "हिंदी साहित्य में चित्रित प्राकृतिक आपदा – कारण और निवारण" विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. प्रणव कुमार मिश्र, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग ने वेबिनार के विषय पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। उन्होंने कहा कि एक ओर प्रकृति जहां मनुष्य के लिए जीवनदायिनी है, उसकी शक्ति एवं ऊर्जा का आधार है वहीं दूसरी ओर उसमें व्यक्ति द्वारा किसी प्रकार का व्यतिक्रम आ जाने पर वह विध्वंसक रूप भी धारण कर लेती हैं। आपने अनके उपन्यासों एवं रचनाओं को आधार बनाकर अपनी बात को पुष्ट करते हुए कहा कि साहित्यकार सदैव से प्रकृति के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष को अभिव्यक्ति प्रदान करता रहा है।

कार्यक्रम में अतिथि वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए अखिलेश कुमार दुबे, आचार्य एवं निदेशक, क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा ने बड़े सारगर्भित रूप से विषय पर प्रकाश डालते हुए अनादिकाल से जोड़ते हुए अद्यतन साहित्य में प्रतिबिम्बित दिखाया। उन्होंने कहा कि वैदिक ऋषि प्रकृति के उपादानों का स्तुतिगान करता है। वह अपने विध्वंसक रूप में हमारे समक्ष आ रही है, आपदा का रूप



ले रही है, हमें उसके कारणों पर विस्तार से मंथन करना चाहिए।

प्रो० वाई०पी० सिंह विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ने मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कहा कि प्राकृतिक आपदाओं के तमाम कारण हैं। पहले हमारे यहां प्रकृति की पूजा होती थी। सूर्य, चन्द्रमा, धरती सबकी पूजा का विधान है। अब लोगों ने उसे मानने से इंकार कर दिया है। वस्तुतः इन प्राकृतिक आपदाओं के तमाम कारण हैं। प्रकृति की अनेक गहन लीलाएं हैं पर मनुष्य के भी अपने अत्याचार हैं, बौद्धिक कुटिलताएँ हैं, उस पर नियंत्रण करना बहुत आवश्यक है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूर्व कुलपति महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के श्री गिरीश्वर मिश्र जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि प्रकृति और मनुष्य का बहुत गहरा रिश्ता भारतीय चिंतन में रहा है। यह एक नैसर्गिक रिश्ता रहा है। प्रकृति के मनुष्य से बड़े गहरे संबंध हैं मनुष्य अपने जीवन यापन के साधन प्रकृति से ही प्राप्त करता है परंतु अब मनुष्य प्रकृति पर अधिकार कर बैठा है, उसका दोहन कर रहा है जिसका परिणाम आपदाओं के रूप में सामने आ रहा है। अब कार्यक्रम समापन की ओर था, अंत में कार्यक्रम में आए हुए सभी मुख्य अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए डॉ० अंजलि अस्थाना ने कहा कि प्रकृति की गोद में प्रथम मानव ने आंखें खोली इसलिए मानव और प्रकृति के इस अटूट संबंध की अभिव्यक्ति धर्म, दर्शन, साहित्य, कला में चिरकाल से होती है। हमारे सभी वक्ताओं ने विषय को एकदम खोल कर रख दिया है हमारे समक्ष, मैं समझती हूँ आज की इस संगोष्ठी से इस परिचर्चा में भाग ले रहे सभी सहयोगियों के भीतर प्रकृति को देखने और उसके साथ बरतने की एक नई दृष्टि का विकास हुआ होगा। इन शब्दों के साथ धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्रबंधक श्री रत्नाकर शुक्ल, प्राचार्य जी प्रो राकेश चन्द्र, डॉ० गुंजन जी, डॉ० नीरजा मिश्रा, डॉ० सजनी, डॉ० कृष्ण चन्द्र, डॉ० राजीव दीक्षित जी, डॉ० अनिल पांडेय, डॉ० मंजुल त्रिवेदी सहित अनेक विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय से प्रतिभागीगण सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन डॉ० अंजलि अस्थाना ने किया।





National Webinar

SOCIO-CULTURAL IMPACT OF COVID-19 IN INDIA

4th September 2020

Department of Sociology

BABU SAH NARAIN VOCATIONAL P.G. COLLEGE (BKV)
बबु साह नारैन वोकेशनल पी.जी. कॉलेज (बेकनगंज)
BKV, BEKANERGAJ, Lucknow

Post-Graduate Department of Sociology, Faculty of Arts
is organizing a National Webinar on the topic
"Socio-Cultural Impact of COVID-19 in India"
on 4th September, Friday at 11:00 a.m.

For any queries:
Contact: 7007453234
Dr. Vandana

Eminent Speakers

Patron
Dr. Rakesh Chandra
Principal
B.S.N.V.P.G. College, Lucknow

Prof. Rajesh Mishra
Former Professor and Head
Dept. of Sociology
University of Lucknow

Prof. Dipi Ranjan Sahu
Former Secretary, Indian Sociological Society
and Head Dept. of Sociology
University of Lucknow

Prof. Madhav Govind
Centre for Studies in Science
School of Social Sciences
Director, H.R.D.C., J.N.U., New Delhi

Coordinator
Dr. C.L. Bajpai
Former Head
Dept. of Sociology
B.S.N.V.P.G. College, Lko

Convener
Dr. Vandana
Head
Dept. of Sociology
B.S.N.V.P.G. College, Lko

Co-convenor
Dr. Vijay Kumar
Associate Professor
Dept. of Sociology
B.S.N.V.P.G. College, Lko

Organizing Secretary
Dr. J.S.P. Pandey
Associate Professor
Dept. of Sociology
B.S.N.V.P.G. College, Lko

Member of Organizing Committee
Dr. M.L. Maurya
Assistant Professor
Dept. of Sociology
B.S.N.V.P.G. College, Lko

Member of Organizing Committee
Dr. Sanjay Shukla
Assistant Professor
Dept. of Sociology
B.S.N.V.P.G. College, Lko

CLICK HERE TO REGISTER e-Certificate of Participation will be given to all the attendees

Department of Sociology, B.S.N.V.P.G. (K.K.V) College, organized a National Webinar On 4th September 2020 entitled **"Socio-Cultural Impact of COVID-19 in India"**. The organizing committee included the convener of the webinar Dr. Vandana, Head of Department, Co-convenor, Dr. Vijay Kumar, Associate Professor, Coordinator Dr. CL Bajpai, Organizing Secretary, Dr. JSP Pandey, Dr. ML Maurya and Dr. Sanjay Shukla. Dr. Vandana introduced the topic of the webinar to eminent speakers and dignitaries.

There were 3 eminent speakers- Professor Rajesh Mishra, Former Professor and Head of Department, Sociology, Lucknow University, Professor D.R. Sahu, Former Secretary Indian Sociology Society and head of Department of Sociology, Lucknow University and Professor Madhav Govind, Centre for studies in social Sciences, Director, H.R.D.C., JNU, New Delhi.

According to Professor Govind, the social response towards COVID-19 pandemic has been differently addressed, be it Inter-country, Inter-religion, inter-class, inter-group. Besides



health concern, it also raised political and social concerns. It has resulted to crisis in society. He compared the various pandemic of 20th and 21st century and also named them. He came forward with some common social and cultural implications. Cultural belief plays a very vital role in the period of such crises. He quoted examples of Corona Devi, people not supporting scientific temper and not co-operating, blaming and boycotting of a particular community or groups etc. Role of info-dynamics becomes critical in the flow of accurate information and rumors which create state of panic in the society. All the sectors have been affected during COVID-19, be it family, infrastructure, social institutions, villages, towns, industries etc. Professor Sahu classified his lecture in 3 stages- 1) pre pandemic society 2) during pandemic and 3) post pandemic society. He informed that 2019 was the period of protests and movements demanding more democracy, more dignity, equal rights in society etc. These movement got obstructed as it was the need of the hour. Media also monopolised this issue and delegated the rest issues to the background. However during COVID one movement persisted, it was of workers right, their food and other needs like travel etc. These all have been taken care of by the government, NGO and people. Culture of voice has changed to culture of silence. But it is a part of strategy in COVID time and these movements will again emerge after the pandemic is over. He brought our attention to the fact that public sphere and private sphere distinction has become blurred and now work from home is the new culture. He also brought forward an observation that home is producing and reproducing inequality which is also leading to stress, anxiety, suicides, domestic violence etc. Political crisis witness during Corona was centre versus state and state collaborative role was missing. Lastly he advocated that health and environment should be merged and seen in a sustainable manner for the service and survival of mankind.

Professor Rajesh Mishra discussed the severity of COVID-19 as compared to previous pandemic as its global spread is excessive. It has resulted to dysfunctional consequences. He mentioned about 3 forces, first was distancing force which held to neighbourhood, family and lastly community distancing. This was witnessed in race and class conflicts in the society. This would lead to damaging impact on the society. Distancing has further led to criminalisation of disease instead of sympathy and empathy. People observe distance and even don't go to attend in case of deaths and if they go they are quarantined and boycotted. Thus people are escaping from reporting of disease because of this ill-treatment. Another force is pauperization meaning poverty is increasing day by day, downward mobility is the result, middle class people are moving to lower middle class and lower middle class to lower income category, salary cuts,



joblessness. Fall in income might increase unrest in society which will lead to increase in hunger, crimes, suicides etc. and society will disintegrate. Lastly, the 3rd force is authoritarianism which is changing the society and family structure. Authoritarianism will lead to control over expression and thus creativity will be obstructed. Human rights will be hampered.

Lastly, Dr. J.S.P. Pandey, organising secretary of the webinar, gave the vote of thanks. Dr. Gunjan Pandey, deptt. of Economics, was the reporter of the webinar. Dr. Sanjiv Shukla, Dr. O.P.B. Shukla, Dr. Meera Vani, Dr. Neelima Gupta, Dr. Neerja Misra, Dr. Rajeev Dixit, Dr. D.K. Gupta, Dr. Madhu Bhatia attended the webinar.





द्वारा भी 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020' के विशेष प्रावधान 'समग्र एवं बहु-विषयक शिक्षा की ओर बढ़ते कदम' के संदर्भ में ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 06 सितम्बर 2020 को किया गया। सर्वप्रथम समग्र एवं बहु-विषयक शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अंतर्गत किए गए प्रावधान अवलोकन हेतु प्रस्तुत हैं-

11. समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर

- 11.1 भारत में समग्र एवं बहु-विषयक तरीके से सीखने की एक प्राचीन परंपरा है, तक्षशिक्षा और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों से लेकर ऐसे कई व्यापक साहित्य हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में विषयों के संयोजन को प्रकट करते हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य जैसे बाणभट्ट की कादंबरी शिक्षा को 64 कलाओं के ज्ञान के रूप में परिभाषित/वर्णित करती है: और इन 64 कलाओं में न केवल गायन और चित्रकला जैसे विषय शामिल हैं, बल्कि वैज्ञानिक क्षेत्र जैसे रसायनशास्त्र और गणित, व्यावसायिक क्षेत्र जैसे बढ़ई का काम और कपड़े सिलने का कार्य, व्यावसायिक कार्य जैसे औषधि तथा अभियांत्रिकी और साथ ही साथ सम्प्रेषण, चर्चा और वाद-संवाद करने के व्यावहारिक कौशल (सॉफ्ट स्किल्स) भी शामिल हैं। यह विचार कि इंसानी सृजन के सभी क्षेत्र (जिसमें गणित, विज्ञान, पेशेवर और व्यावसायिक विषय और व्यावहारिक कौशल शामिल हैं) को कलाओं के रूप में देखा जाना चाहिए, भारतीय चिंतन की देन है। विभिन्न कलाओं के ज्ञान के इस विचार, या जैसा कि आधुनिक युग में जिसे 'लिबरल आर्ट्स (कलाओं का एक उदार नजरिया) कहा जाता है, को भारतीय शिक्षा में पुनः शामिल करना ही होगा, चूंकि यह वही शिक्षा है जिसकी 21वीं शताब्दी में आवश्यकता होगी।
- 11.2 आकलन से पता चलता है कि, स्नातक शिक्षा के दौरान, ऐसी शैक्षणिक पद्धतियाँ जो एसटीईएम (विज्ञान, तकनीकी, अभियांत्रिकी और गणित) के साथ मानविकी और कला शिक्षा को समाहित करती हैं, तो रचनात्मकता और नवाचार, आलोचनात्मक चिंतन एवं उच्चतर स्तरीय चिंतन की क्षमता, समस्या समाधान योग्यता, समूह कार्य में दक्षता, सम्प्रेषण कौशल, सीखने में गहराई और पाठ्यक्रम के सभी विषयों पर पकड़, सामाजिक और नैतिकता के प्रति जागरूकता आदि जैसे सकारात्मक शैक्षणिक परिणाम प्राप्त हुए हैं और साथ ही, समग्र और बहु-विषयक शिक्षा दृष्टिकोण के माध्यम से अनुसंधान में भी सुधार और बढ़ोत्तरी हुई है।
- 11.3 एक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की सभी क्षमताओं-बौद्धिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, शारीरिक, भावात्मक, तथा नैतिक-को एकीकृत तरीके से विकसित करना होगा। ऐसी शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास : कला, मानविकी, भाषा, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, और व्यावसायिक, तकनीकी और व्यावसायिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण 21वीं सदी की क्षमता, सामाजिक जुड़ाव की नैतिकता, व्यावहारिक कौशल (सॉफ्ट स्किल्स), जैसे सम्प्रेषण, चर्चा, वाद-विवाद, और एक चुने हुए क्षेत्र या क्षेत्रों में अच्छी विशेषज्ञता में मदद करेगी। इस तरह की एक समग्र शिक्षा, लंबे समय तक व्यावसायिक, तकनीकी और पेशेवर विषयों सहित सभी स्नातक कार्यक्रमों का दृष्टिकोण होगा।
- 11.4 एक समग्र और बहु-विषयक शिक्षा, जो कि भारत के इतिहास में सुन्दर ढंग से वर्णित की गई है-वास्तव में आज के स्कूलों की जरूरत है, ताकि हम इक्कीसवीं शताब्दी और चौथी औद्योगिक क्रांति का नेतृत्व



कर सकें। यहाँ तक कि अभियांत्रिकी संस्थान जैसे आई.आई. टी, कला और मानविकी के साथ समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर बढ़ेंगे। कला एवं मानविकी के छात्र भी विज्ञान सीखेंगे, कोशिश यही होगी कि सभी व्यावसायिक विषय और व्यावहारिक कौशलों (सॉफ्ट स्किल्स) को हासिल करें। कला, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में भारत की खास विरासत इस तरह की शिक्षा की ओर बढ़ने में सहायक होगी।

- 11.5 कल्पनाशील और लचीली पाठ्यक्रम संरचनाएँ अध्ययन के लिए विषयों के रचनात्मक संयोजन को सक्षम करेंगी, और कई प्रवेश और निकास बिन्दुओं के विकल्प होंगे। इस तरह से आज की कठोर अनुशासनात्मक सीमाओं को हटाकर आजीवन सीखने की संभावनाओं को बढ़ावा मिलेगा। बड़े बहु विषयक विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तर (शिक्षा जगत), सरकार और उद्योग सहित, बहु-विषयक कार्यों के अवसर भी प्रदान करेगा।
- 11.6 बड़े बहु-विषयक विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में उच्चतर-गुणवत्ता की समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की दिशा में कदम बढ़ाए जाएंगे। विषयों में कठोर विशेषज्ञता के अलावा, छात्रों को पाठ्यचर्चा में लचीलापन, नए और रोचक कोर्सेस के विकल्प दिए जाएंगे। पाठ्यक्रम निर्धारित करने में संकाय और संस्थागत स्वायत्ता द्वारा इसे प्रोत्साहित किया जाएगा। शिक्षाशास्त्र में संचार, चर्चा, बहस, अनुसंधान और क्रॉस-डिसिप्लिनरी और अंतः विषयक सोच के अवसरों पर अधिक जोर होगा।
- 11.7 देश के विभिन्न उच्चतर शिक्षा संस्थानों (एचईआई) में भाषा, साहित्य, संगीत, दर्शन, भारत-विद्या, कला, नृत्य, नाट्यकता, शिक्षा, गणित, सांख्यिकी, सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, खेल, अनुवाद एवं व्याख्या और अन्य ऐसे विषयों के विभागों को बहु-विषयक, भारतीय शिक्षा और वातावरण को प्रोत्साहित करने के लिए स्थापित और मजबूत किया जाएगा। इन विषयों में सभी स्नातक उपाधि कार्यक्रमों में क्रेडिट दिया जाएगा यदि वे ऐसे विभागों से या ओडीएल मोड के माध्यम से किए जाते हैं, जब उन्हें एचईआई की कक्षाओं में उपलब्ध नहीं कराया जाता है।
- 11.8 ऐसी समग्र और बहु-विषयक शिक्षा के विचार को धरातल पर लाने के लिए, सभी एचईआई के लचीले और नवीन पाठ्यक्रम में क्रेडिट आधारित पाठ्यक्रम और सामुदायिक जुड़ाव और सेवा, पर्यावरण शिक्षा, और मूल्य-आधारित शिक्षा के क्षेत्र शामिल होंगे। पर्यावरण शिक्षा में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता, जैविक विविधता संरक्षण, जैविक संसाधनों का प्रबंधन और जैव विविधता, वन और वन्यजीव संरक्षण, और सतत विकास तथा रहने जैसे क्षेत्र शामिल होंगे। मूल्य आधारित शिक्षा में निम्न शामिल हैं : मानवीय, नैतिक, संवैधानिक तथा सार्वभौमिक मानवीय मूल्य जैसे सत्य, नेक आचरण (Dharma), शांति, प्रेम, अहिंसा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नागरिक मूल्य और जीवन-कौशल, सेवा तथा सामुदायिक कार्यक्रमों में सहभागिता समग्र शिक्षा का अभिन्न अंग होगा। जैसे-जैसे दुनिया तेजी से आपस में जुड़ती जा रही है, वैश्विक नागरिक शिक्षा (जीसीईडी), समकालीन वैश्विक चुनौतियों की प्रतिक्रिया, शिक्षार्थियों को वैश्विक नागरिक शिक्षा (जीसीईडी), समकालीन वैश्विक चुनौतियों की प्रतिक्रिया, शिक्षार्थियों को वैश्विक मुद्दों को समझने और अधिक शांतिपूर्ण, सहिष्णु, समावेशी, सुरक्षित और सतत समाज के सक्रिय प्रवर्तक बनने के लिए प्रदान की जाएगी। अंततः समग्र शिक्षा के अंतर्गत, उच्चतर शिक्षा संस्थान अपने ही संस्थानों में या अन्य उच्चतर शिक्षा/शोध संस्थानों में इंटर्नशिप के



अवसर उपलब्ध कराएंगे, जैसे—स्थानीय उद्योग, व्यवसाय, कलाकार, शिल्पकार आदि के साथ इंटरनशिप और अध्यापकों और शोधार्थियों के साथ, शोध इंटरनशिप ताकि छात्र सक्रिय रूप से अपने सीखने के व्यावहारिक पक्ष के साथ जुड़ें और साथ ही साथ, स्वयं के रोजगार की संभावनाओं को भी बढ़ा सकें।

- 11.9 डिग्री कार्यक्रमों की अवधि और संरचना में तदनुसार बदलाव किया जाएगा। स्नातक उपाधि 3 या 4 वर्ष की अवधि की होगी, जिसमें उपयुक्त प्रमाणपत्र के साथ निकास के कई विकल्प होंगे। उदाहरण के तौर पर, व्यावसायिक तथा पेशेवर क्षेत्र सहित किसी भी विषय अथवा क्षेत्र में 1 साल पूरा करने पर सर्टिफिकेट या 2 साल पूरा करने पर डिप्लोमा या 3 साल के कार्यक्रम के बाद स्नातक की डिग्री। 4 वर्षीय स्नातक प्रोग्राम, जिसमें बहु-विषयक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा, क्योंकि इस दौरान यह विद्यार्थी की रुचि के अनुसार चुने हुए मेजर और माइनर पर ध्यान केंद्रित करने के अलावा समग्र तथा बहु-विषयक शिक्षा का अनुभव लेने के अवसर प्रदान करता है। एक अकादमिक क्रेडिट बैंक (एबीसी) स्थापित किया जाएगा जो अलग-अलग मान्यता प्राप्त उच्चतर शिक्षण संस्थानों से प्राप्त क्रेडिट को डिजिटल रूप से संकलित करेगा ताकि प्राप्त क्रेडिट के आधार पर उच्चतर शिक्षण संस्थान द्वारा डिग्री दी जा सके। यदि छात्र एचईआई द्वारा निर्दिष्ट अध्ययन के अपने प्रमुख क्षेत्र (क्षेत्रों) में एक कठोर शोध परियोजना को पूरा करता है तो उसे 4 वर्षीय कार्यक्रम में शोध सहित डिग्री भी दी जा सकती है।
- 11.10 उच्चतर शिक्षण संस्थानों (एचईआई) को विभिन्न प्रारूपों में स्नातकोत्तर कार्यक्रमों को मुहैया कराने की छूट होगी (क) ऐसे विद्यार्थियों के लिए जिन्होंने 3 साल का स्नातक कार्यक्रम पूरा किया हो, उन्हें 2 वर्षीय कार्यक्रम प्रदान किए जा सकते हैं जिसमें द्वितीय वर्ष पूरी तरह से शोध पर केन्द्रित हो, (ख) के विद्यार्थियों जिन्होंने 4 वर्ष का स्नातक कार्यक्रम शोध के साथ पूरा किया है, उनके लिए एक वर्ष का स्नातकोत्तर कार्यक्रम हो सकता है, और (ग) 5 वर्षों का एक एकीकृत स्नातक/स्नातकोत्तर कार्यक्रम हो सकता है। पीएच-डी के लिए या तो स्नातकोत्तर डिग्री या 4 वर्षों के शोध के साथ प्राप्त स्नातक डिग्री अनिवार्य होगी। एम.फिल कार्यक्रम को बंद कर दिया जाएगा।
- 11.11 समग्र और बहु-विषयक शिक्षा के लिए आई.आई.टी., आई.आई.एम, आदि की तर्ज पर, मेरू (बहु विषयक शिक्षा और शोध विश्वविद्यालय) नामक मॉडल सार्वजनिक विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाएगी। इन विश्वविद्यालयों का उद्देश्य, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में उच्चतम वैश्विक मानकों को अर्जित करना होगा। ये देश भर में बहु-विषयक शिक्षा के उच्चतम मानक भी स्थापित करेंगे।
- 11.12 उच्चतर शिक्षण संस्थान स्टार्ट-अप, इन्क्यूबेशन सेंटर, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र, अनुसंधान के प्रमुख क्षेत्रों के केन्द्र, अधिकतम उद्योग-अकादमिक जुड़ाव और मानविकी और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान सहित अंतर-विषय अनुसंधान की स्थापना करके अनुसंधान और नवाचार पर फोकस करेंगे। संक्रामक रोगों और वैश्विक महामारियों के परिदृश्य को देखते हुए, यह महत्वपूर्ण है कि उच्चतर शैक्षणिक संस्थान, संक्रामक रोगों, महामारी विज्ञान, वायरोलॉजी, डाइग्नोस्टिक्स, इंस्ट्रुमेंटेशन, वैक्सीनोलॉजी और अन्य प्रासंगिक क्षेत्रों में अनुसंधान करने की अगुवाई करें। छात्र समुदाय के बीच नवाचार को बढ़ावा देने के लिए उच्चतर शिक्षण संस्थान विशिष्ट हैंडहोल्डिंग तंत्र विकसित करेगा। एनआरएफ, उच्चतर शिक्षण



संस्थानों अनुसंधान प्रयोगशालाओं और अन्य अनुसंधान संगठनों में इस तरह के एक जीवंत अनुसंधान और नवाचार संस्कृति को सक्षम करने और समर्थन करने में मदद करने के लिए कार्य करेगा।

“समग्र एवं बहु-विषयक शिक्षा की ओर कदम” के संदर्भ में परिचर्चा को उपरोक्त बिंदुओं पर केंद्रित किया गया। उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा परिषद के अध्यक्ष एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० गिरीश चन्द्र त्रिपाठी ने इस ऑनलाइन कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मुख्य वक्ता के रूप में इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के अध्यक्ष एवं ख्यातिलब्ध शिक्षाविद प्रो० धनञ्जय यादव सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम के अध्यक्षीय वक्तव्य के दौरान प्रो० जी.सी. त्रिपाठी ने कहा कि प्राचीन काल से ही भारत जगतगुरु के रूप में प्रतिष्ठित रहा है। किन्तु हम अपनी विकृतियों के कारण लगभग आठ सौ वर्षों तक पराधीन रहे। प्रो० त्रिपाठी ने कहा कि किसी भी देश को अपनी समस्याओं से निपटने हेतु सामर्थ्यवान, संस्कारवान और चरित्रवान लोगों की आवश्यकता होती है जिसके निर्माण का दायित्व शिक्षा का है। उन्होंने यह भी कहा कि आज की एक बड़ी समस्या बेरोजगारी है। विभिन्न कार्यक्षेत्रों में जिस प्रकार का हुनर रखने वाले लोगों की आवश्यकता है उस प्रकार के लोगों का निर्माण करने में हम सफल नहीं हो पा रहे हैं। ऐसी चुनौतियों से निपटने के लिए नई शिक्षा नीति 2020 पूरी तरह से सक्षम दिखाई देती है जो कि अपने स्वरूप में समन्वित, एकीकृत तथा बहुविषयक है। आशा है नई शिक्षा नीति से हम ऐसे नागरिकों का निर्माण कर पाएंगे जो कि अपने उत्थान के साथ ही अपने परिवार तथा राष्ट्र का उत्थान कर सकने में समर्थ होंगे। आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए हमें लोगों को आत्मनिर्भर बनाना होगा जिस हेतु शिक्षा की सर्वप्रमुख भूमिका है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार रखते हुए प्रो० धनञ्जय यादव ने कहा कि नई शिक्षा नीति अपने स्वरूप में बहुआयामी है। इस नवीन नीति में हमने उन दोषों को दूर करने का प्रयास किया है जिनके कारण हम संख्यात्मक वृद्धि तो कर रहे थे किन्तु गुणात्मक वृद्धि में पिछड़ रहे थे। अब विषयों के चुनाव में छात्रों को अधिक स्वतंत्रता रहेगी। स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में “मल्टीपल एंट्री एवं एग्जिट” की सुविधा विद्यार्थियों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इसके साथ ही तकनीकी आधारित “ब्लेंडेड लर्निंग” को हमारी शिक्षा प्रक्रिया हेतु विशेष उपयोगी बताया गया। इस दौरान प्रो० यादव ने तकनीकी चुनौतियों पर भी विस्तृत चर्चा की। नई शिक्षा नीति में क्रिटिकल थिंकिंग को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं, यह इसकी एक प्रमुख विशेषता है। इसके द्वारा हम एक समर्पित अधिगमकर्ता को तैयार कर सकेंगे जो कि अपने प्रति, समाज के प्रति एवं राष्ट्र के प्रति ईमानदारी पूर्वक कार्य करेगा। इस नई शिक्षा नीति में हमने सुविधाजनक एंट्री एवं एग्जिट को स्नातक स्तर पर लागू करने की मंशा जताई है, जिसके अंतर्गत 1 वर्ष का अध्ययन करने वालों को सर्टिफिकेट कोर्स का प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा। लेकिन हमें इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि इस सुविधा के अंतर्गत जो भी अधिगमकर्ता विभिन्न पाठ्यक्रम में प्रवेश लेंगे वह अपने निर्णयों के प्रति दृढ़ हो। ऐसा ना हो कि 1 वर्ष बाद हम पुनः नवीन विषयों के साथ आगे बढ़ें। इसके लिए हमें माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर विद्यार्थियों को विशेष प्रशिक्षण देना होगा ताकि वह अपने अकादमिक निर्णयों के संदर्भ में आत्मनिर्भर बन सकें। हमें अधिगमकर्ता की स्वायत्तता पर विशेष ध्यान देना होगा। जब हम बात करते हैं संस्थाओं की स्वायत्तता पर, शिक्षकों की स्वायत्तता पर तब हमें विद्यार्थियों की स्वायत्तता पर भी गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा। भारत एक विविधता पूर्ण देश है अनेक भाषाएं



एवं संस्कृति यहां की खूबसूरती है। नई शिक्षा नीति में भाषा के संदर्भ में प्राथमिक स्तर पर विशेष प्रावधान किए गए हैं किंतु हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि पाठ्यवस्तु विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में भी छात्रों के अध्ययन हेतु उपलब्ध हो। आज की यह नई शिक्षा नीति वर्तमान की आवश्यकताओं एवं भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाई गई है। हमें इस बात पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि शिक्षा के माध्यम से हम केवल वर्तमान चुनौतियों का सामना करने के लिए ही ना तत्पर हों बल्कि भावी चुनौतियों का सामना करने वाले विद्यार्थी भी हम तैयार कर सकें। इसके लिए हमें कुछ सिद्धांतों को ध्यान में रखना होगा जिनमें लोचनीयता का सिद्धांत, समता का सिद्धांत, पारदर्शिता एवं एकजुटता का सिद्धांत एवं जवाबदेही के साथ स्वायत्तता का सिद्धांत प्रमुख हैं। वर्तमान दौर में शिक्षा में तकनीकी का दखल निरंतर बढ़ा है। कोविड-19 की स्थिति ने तकनीकी के प्रयोग के माध्यम से विद्यार्थियों के साथ जुड़ने की प्रवृत्ति को और बल दिया है किंतु हमें इस बात को ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि सभी विद्यार्थियों एवं अध्यापकों तक तकनीकी की बेहतर पहुंच सुनिश्चित हो यहां केवल हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर तक ही सीमित न रह करके हमें इसकी गुणवत्ता पर भी विशेष ध्यान देने की जरूरत है। नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिए एवं उसकी मंशा को सफल बनाने के लिए अध्यापकों के प्रशिक्षण एवं उनकी योग्यता को बढ़ाने पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। भावी अध्यापक इस नई शिक्षा नीति के आधार पर कार्य कर सकें। हमारे वर्तमान कार्यरत अध्यापकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि वह राष्ट्र के इस नवीन संकल्प को सिद्धि तक पहुंचा सके।

इस दौरान वेबिनार को महाविद्यालय की प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री टी0एन0 मिश्र द्वारा भी संबोधित किया गया। श्री मिश्र ने अपने उद्बोधन में व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में महाविद्यालय के योगदान की विशेष चर्चा की। समापन सत्र के दौरान डॉ0 अनिल पांडेय ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए नवीन शिक्षा नीति पर सारगर्भित विचार रखे। कार्यक्रम की मुख्य आयोजक डॉ0 गीतारानी तथा संयोजक मजुल त्रिवेदी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

इस दौरान महाविद्यालय के वेबमन्च पर प्रबंधक श्री रत्नाकर शुक्ल, प्राचार्य प्रो0 राकेश चन्द्रा एवं महाविद्यालय के सभी शिक्षकों समेत विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शिक्षक एवं छात्र उपस्थित रहें।





International Webinar

ENTREPRENEURSHIP POST THE PANDEMIC : CHALLENGES AND OPPORTUNITIES

12th September 2020

Department of Economics

BAIPPA SHRI NARAIN VOCATIONAL P.G. COLLEGE (KKV)
बप्पा श्री नारायण वोकेशनल पी.जी. कॉलेज (केकेवी)
NAAC ACCREDITED 'B' INSTITUTION

Department of Economics
is organizing an
INTERNATIONAL WEBINAR
on
"ENTREPRENEURSHIP POST THE PANDEMIC: CHALLENGES AND OPPORTUNITIES"
on 12th September 2020, Saturday at 5:00 p.m.

Eminent Speakers

 Sri. Rakesh Chandra Principal	 Dr. Neerja Misra Convener	 Dr. Devendra K. Shukla Founder Innovative Technical Solution INC	 Mr. Rahul Misra Managing Director Jefferies Financial Group	 Mr. Vaibhav Tewari Chief Operating Officer Portea Medical
 Dr. Gunjan Pandey Co-convenor				

e-Certificate of Participation will be given to all the attendees

An international Webinar on “**Entrepreneurship post the pandemic : Challenges and opportunities**” was held on Saturday, September 12, 2020. Scholars from the Philippines, Nigeria, Singapore, Zambia and the United States registered for the webinar. Scholars from almost all states of India, Uttarakhand, Madhya Pradesh, Himachal Pradesh, Haryana, Delhi, Punjab, Assam, Gujarat, Rajasthan, Maharashtra, Karnataka, Bihar, Odisha, Chattisgarh, Tamil Nadu, Telangana, Andhra Pradesh, Jharkhand, West Bengal, Kerala, Jammu and Kashmir and Uttar Pradesh also participated in the Webinar. The Webinar which started at 5:00 pm India time was addressed by the eminent speakers: Shri Vaibhav Tewari, Chief Operating officer, Portea Medical, Shri Rahul Misra, head of Equities and Managing Director, Jefferies, Financial Group, a global investment Banking firm and Dr. Devendra Kumar Shukla, Founder of Innovative Technical Solutions Inc. USA.



Mr. Vaibhav Tewari in his presentation talked about how he helped in setting up Portea, the largest consumer healthcare brand outside of hospitals in India. He talked about how he built up the organization to a scale of over 4000 employees with operations in 20 cities and serving over 1 million patients so far. He also discussed at length the problems he faced in the task and how he overcame them.

The second presentation was that of Shri Rahul Misra who spoke about the sources which finance small businesses in the country. He also educated that one out of every three businesses failed but that was not due to lack of funds. He stressed that unlike in the developed markets, in India there is a stigma attached to entrepreneurship.

The third and last presentation was that of Dr. Devendra Kumar Shukla, an alumni of IIT (Kanpur). He spoke at length about the importance of honesty and building trust among the stake holders including family and employees. He elaborated that looking after and building trust among co-workers and employees was the basic building store of every successful businesses. Post the Pandemic the economy has thrown up numerous opportunities for businesses all around. The need of the hour was to recognize these opportunities.

The Webinar concluded with a vote of thanks from the Principal, Sri Rakesh Chandra.





राष्ट्रीय वेबिनार

TEACHER AND EDUCATION DURING THE PANDEMIC PERIOD

22 सितम्बर 2020

शिक्षाशास्त्र विभाग

BAPPA SRI NARAIN VOCATIONAL P.G. COLLEGE (KRV)
बप्पा श्री नारायण वोक्ेशनल पी.जी. कॉलेज (केकेवी)
NAAC ACCREDITED 'B' INSTITUTION

Department of Education
is organizing a
NATIONAL WEBINAR
on the topic

"TEACHER AND EDUCATION DURING THE PANDEMIC PERIOD"
on 22nd September 2020, Tuesday at 12:00 noon

Keynote Speaker Dr. Chandra Pal Singh Chauhan (Former Professor of Education) Chairman, Dept. of Education (1996-99 & 2005-08) President of All India Association of Teacher Education (AIATE)	Keynote Speaker Dr. Tarulata Devi Associate Professor Dept. of Education R. P. College Nachintakoli, Cutack (Utkal University) Odisha	Patron Sri Rakesh Chandra Principal B.S.N.V.P.G. College Lucknow	Convener and Head Dr. Gesta Rani Associate Professor Dept. of Education B.S.N.V.P.G. College Lucknow	Co-ordinator Dr. Anil Kumar Pandey Associate Professor Dept. of Education B.S.N.V.P.G. College Lucknow	Organising Secretary Dr. Manjul Trivedi Assistant Professor Dept. of Education B.S.N.V.P.G. College Lucknow

e-Certificate of Participation will be given to all the attendees

बप्पा श्रीनारायण वोक्ेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय लखनऊ के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा दिनांक 22 सितम्बर 2020 दिन मंगलवार को विषय **"Teacher and Education during the pandemic period"** पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का ऑनलाइन आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी के वेबमंच पर आसीन प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री टी.एन. मिश्रा, प्रबंधक/मंत्री श्री रत्नाकर शुक्ल, प्राचार्य श्री राकेश चंद्र के साथ ही अतिथियों के रूप में विशिष्ट वक्ता श्री सी०पी० सिंह चौहान पूर्व अध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग एवं डीन समाज-विज्ञान संकाय अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय एवं द्वितीय मुख्य वक्ता डॉ० तरुलता देवी, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, पी.जी. कालेज निश्चिन्त कोलि, कटक उत्कल विश्वविद्यालय, उड़ीसा उपस्थित थीं। शिक्षाशास्त्र विभाग (बी.एस.एन.वी. पी.जी. कॉलेज, लखनऊ) के सदस्य डॉ० अनिल कुमार पांडेय, (सह संयोजक) एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. गीता रानी (संयोजक) विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर तथा डॉ० मंजुल त्रिवेदी (आयोजन सचिव), असिस्टेंट प्रोफेसर द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ किया गया। संगोष्ठी का संचालन डॉ० गीता रानी द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष द्वीप प्रज्वलन के साथ सरस्वती वंदना से किया गया, जो कि वीडियो रिकॉर्डिंग से सम्भव हो सका। माँ सरस्वती के आशीर्वाद से प्रारंभ इस गोष्ठी में अध्यक्ष, प्रबंध समिति, महोदय श्री टी.एन.मिश्र,



श्री रत्नाकर शुक्ल जी (प्रबंधक/मंत्री), एवं प्राचार्य जी के आशीर्वाद से अनिल कुमार पांडेय (सह संयोजक) द्वारा विशिष्ट वक्ता का परिचय दिया गया तत्पश्चात संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ।

विशिष्ट वक्ता श्री सी.पी. सिंह चौहान जी ने अपने वक्तव्य में COVID-19 के वैश्विक संक्रमण काल से उत्पन्न परिस्थितियों से सन्दर्भित विचार प्रस्तुत किये। आपका कहना था, कि इस संक्रमण काल में देश सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक समस्याओं से जूझ रहा है। यह स्थिति सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। परंतु इस संक्रमण काल ने शिक्षा जगत को सर्वाधिक प्रभावित किया है। उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि शिक्षक-शिक्षार्थी, शासक-प्रशासक, सभी इस समस्या से चिंतित हैं। कारण जब तक वैक्सीन नहीं है तब तक सभी को Corona virus से स्वयं के साथ-साथ अपनों को बचाते हुए, virus के साथ रहना सीखना पड़ेगा। इस हेतु मास्क और sanitizer का प्रयोग दिनचर्या में शामिल करना अनिवार्य होगा। 1. विद्यालय का वातावरण साफ और स्वच्छ रखना। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की असेंबली और प्रार्थना के साथ अन्य सामूहिक कार्यों को करने से रोकना। स्कूल, कॉलेज तथा विद्यार्थियों के लिए मास्क एवं Sanitizer का प्रयोग अनिवार्य कर देना। 2. शिक्षकों का दायित्व अधिक महत्वपूर्ण है, उनके लिये orientation प्रोग्राम, तकनीकी शिक्षा की शिक्षा व्यवस्था करना। 3. प्रयोगात्मक विषयों की शिक्षा हेतु छोटे-छोटे समूह विभाजित करना। इसके साथ P.P.T., E-Content तैयार करना, जिससे विद्यार्थियों को सामाजिक दूरी के साथ शिक्षा प्रदान की जा सके। 4. कॉलेज स्तर पर higher power network को उपलब्ध करवाना। 5. साथ ही साथ सरकारी संसाधन की व्यवस्था के रूप में smart phone, working computer, Network problems पर निवेश करना। 6. विद्यालय में face to face and online शिक्षा की आवश्यक रूप से व्यवस्था करना। सरकार को नगरों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में भी network की समस्या हल करनी चाहिए। अन्यथा ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों की शिक्षा पिछड़ जाएगी। चौहान जी ने कुछ नकारात्मक प्रभाव की भी चर्चा की। जो कि बच्चों, शिक्षक, अभिभावक सभी पर पड़ सकते हैं। जैसे कि 1. बच्चों और बड़ों का अधिक समय फोन पर व्यतीत करना। जिससे चिंता, सरदर, तनाव, दृष्टि-दोष, विस्मृत इत्यादि लक्षण लोगों में दिखाई दे रहे हैं। 2. बच्चों का Reading, Writing जैसे कौशल का न सीख पाना। 3. मनोविज्ञान के अनुसार 93% सहज बोध परस्पर क्रिया से सम्भव होता है, जो कि online शिक्षण से असंभव है। बच्चों में संवेगात्मक विकास रुक जाना तथा उनका नींद, चिड़चिड़ापन, जैसी समस्या से ग्रसित होना इत्यादि इन समस्याओं का ध्यान रखते हुए शिक्षण संस्थान को खोलना चाहिए और सरकार को भी आंशिक वित्त ऑनलाइन शिक्षण हेतु महाविद्यालय को प्रदान करना होगा।

संक्षिप्त परिचय के बाद मुख्य वक्ता डॉ० तरुलता देवी का वक्तव्य प्रारम्भ हुआ उन्होंने मंच पर आसीन सभी सदस्यों के समक्ष विषय बिन्दु को स्पष्ट किया कि वैश्विक परिदृश्य COVID-19 की इस अवधि में विश्व के 213 देश प्रभावित हुए। यू.एस.ए., भारत और ब्राजील प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्तर पर संक्रमित थे। इस संक्रमण से संपूर्ण विश्व में lockdown, shutdown, emergency, threat जैसी स्थिति से जनसामान्य प्रभावित था।

चिकित्सालय में plasma therapy द्वारा संक्रमित लोगों का इलाज किया गया क्योंकि अभी तक वैक्सीन तैयार न होने के कारण संक्रमण ने लोगों के जीवन को पंगु बना दिया है। आकस्मिक रूप से उत्पन्न इन



परिस्थितियों ने उत्पादन, पूर्ति, योजना, तथा कार्यक्रमों को स्थिर कर दिया है।

सभी जनसामान्य स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों के लिए चेतन और सक्रिय हो गए हैं। स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। परिणाम स्वरूप देश की उन्नति व विकास थम सा गया है और एक दशक पिछड़ भी गया है। मंदिर, मस्जिद, चर्च, व्यवसाय, परिवहन, यात्रा, उद्योग, अर्थव्यवस्था, शिक्षा सभी साधन पूर्णतया रुक गये। सर्वाधिक दुष्प्रभाव शिक्षा पर हुआ है। पाठ्यक्रम संक्षिप्त हो गए तथा परीक्षा व मूल्यांकन ग्रेड सिस्टम पर निर्भर हो गए। शिक्षण की नई तकनीक को सीखना पड़ रहा है। जैसे ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षण में भी स्थितियां सामान्य नहीं हैं, परंतु अर्थव्यवस्था और अनिश्चितता व्याप्त है।

संक्रमण काल में कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखे जा सकते हैं जैसे—अनिश्चित काल के लिए शिक्षण संस्थान बंद कर दिए गए जिससे रोजगार खत्म हो गये। 2. शिक्षक, शिक्षार्थी ऑनलाइन शिक्षा के लिए तैयार नहीं थे। 3. शहरी, ग्रामीण तथा सरकारी, गैरसरकारी के बीच भिन्नता बढ़ रही है। drop outs की दर में वृद्धि हो गई है। 4. समाजीकरण का अभाव, तनाव, चिंता, शैक्षिक दक्षता में कमी हो गई। घर में होने के कारण क्रियाएं खत्म होने लगी इत्यादि। इन परिस्थितियों के कुछ सकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिल रहे हैं जैसे— 1. शिक्षण सामग्री सॉफ्ट कॉपी में प्रयोग की जाने लगी साथ ही Blended learning का प्रभाव बढ़ गया। सहयोगात्मक कार्य में सुधार हुए। 2. शैक्षिक गतिविधियों का विस्तार webinar, competitions के रूप में हुआ। लोगों में तकनीकी, कौशल व क्षमताएं विकसित हुई हैं। 3. जनसंचार के माध्यम से सूचनाएं साझा की जाने लगी हैं। ऑनलाइन शिक्षण की माँग बढ़ने लगी है। 4. विश्वस्तर पर सर्जनात्मक दक्षता दिखने लगी साथ ही समय का सदुपयोग किया जाने लगा।

वैश्विक संक्रमण काल की इस समस्या को देखते हुए उन्होंने कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किए जैसे— 1. शिक्षा, व्यवस्था को पुनः संसाधन व संपोषकता के साथ विकसित करना। 2. नेटवर्किंग समस्या का हल निकालना शैक्षिक हानि की पूर्ति करना 3 शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अभिभावक को परामर्श देना इत्यादि इन सुझावों के साथ डॉ० तरुलता ने अपनी वाणी को विराम दिया। तत्पश्चात डॉ० मंजुल त्रिवेदी द्वारा वेबमंच से प्रश्नोत्तर (वक्तव्य आधारित) किया गया। जिसमें सभी लोगों ने सक्रिय रह कर अपनी जिज्ञासाये शांत की। शिक्षाशास्त्र विभाग की ओर से डॉ० गीता रानी और डॉ० मंजुल त्रिवेदी द्वारा लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, तमिलनाडु, दिल्ली इत्यादि क्षेत्रों के विभिन्न शिक्षक, शिक्षार्थी प्राचार्य जी, कॉलेज प्रबंधतंत्र के सदस्यों तथा विशिष्ट अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस प्रकार ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हुआ।





राष्ट्रीय वेबिनार कोविड-19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में गणितीय मॉडलिंग की भूमिका

26 सितम्बर 2020

गणित विभाग

BAPPA SRI NARAIN VOCATIONAL P.G. COLLEGE (KRV)
बपपा श्री नारायण वोकेशनल पी.जी. कॉलेज (केकेवी)
BASIC ACCREDITED 'B' INSTITUTION

Department of Mathematics, B.S.N.V. Post Graduate College
is organizing a National Webinar on the topic

"Role of Mathematical Modelling in the Perspective of Covid-19 Pandemic"
"कोविड-19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में गणितीय मॉडलिंग की भूमिका"

on 26th September, Saturday at 11:00 A.M.

EMINENT SPEAKERS

Chief Patron
Shri T.H. Mishra
President
B.S.N.V. Institute
Lucknow

Chief Patron
Shri Ratnakar Shukla
Secretary/Manager
B.S.N.V. P.G. College
Lucknow

Patron
Shri Rakesh Chandra
Principal
B.S.N.V. P.G. College
Lucknow

Convener
Dr. Jai Pratap Singh
Associate Professor & Head
Deptt. of Mathematics
B.S.N.V. P.G. College
Lucknow

Co-convener
Dr. Kaushal Kumar Bajpai
Associate Professor
Deptt. of Mathematics
B.S.N.V. P.G. College
Lucknow

Coordinator
Dr. Rajendra Singh
Associate Professor
Deptt. of Mathematics
B.S.N.V. P.G. College
Lucknow

Organizing Secretary
Dr. Deepak K. Shrivastava
Associate Professor
Deptt. of Mathematics
B.S.N.V. P.G. College
Lucknow

Keynote Speaker
Prof. V.K. Katiyar
Former Head, Deptt. of Mathematics, I.I.T. Roorkee
Presently Dean Academics & Research
University of Patanjali, Haridwar, Uttarakhand

Keynote Speaker
Prof. Mini Ghosh
School of Advanced Sciences
(SAS) | Mathematics
V.I.T. Chennai

For any queries:
Contact:
9450908919
9935623044

e-Certificate of Participation will be given to all the attendees

गणित विभाग, बी.एस.एन.वी. पी.जी. कॉलेज (केकेवी), लखनऊ द्वारा "कोविड-19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में गणितीय मॉडलिंग की भूमिका" पर दिनांक 26-09-2020 को राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार में बीजीय वक्तव्य हेतु निम्न प्रख्यात वक्ताओं को आमंत्रित किया गया-

1. प्रो० वी० के० कटियार

पूर्व अध्यक्ष, गणित विभाग, आई०आई०टी० रुड़की, उत्तराखण्ड

वर्तमान में- डीन, एकेडेमिक एण्ड रिसर्च पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

2. प्रो० मिनी घोष

स्कूल ऑफ एडवान्सड स्टडीज गणित वेल्सूर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, चेन्नई, तमिलनाडु

ठीक प्रातः 11:00 बजे वर्चुअल मोड में जूम प्लेटफॉर्म पर तथा यूट्यूब चैनल पर दीप प्रज्ज्वलन व सरस्वती वंदना के बाद बी.एस.एन.वी. इंस्टीट्यूट, लखनऊ, के अध्यक्ष श्री टी० एन० मिश्र जी के आशीर्वचन व अनुमति के उपरांत वेबिनार का शुभारंभ हुआ। संयोजक डॉ० जे० पी० सिंह द्वारा सभी प्रतिभागियों का स्वागत



किया गया। तत्पश्चात् कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ० दीपक कुमार श्रीवास्तव द्वारा वेबीनार की विषय वस्तु—“कोविड-19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में गणितीय मॉडलिंग की भूमिका” पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि दुनिया भर में गणितीय मॉडलों द्वारा की जा रही भविष्यवाणी के आधार पर ही हम यह समझ पा रहे हैं कि कोविड-19 महामारी से बचने के नये तरीके कौन-कौन से हो सकते हैं तथा परीक्षण के दूसरे व तीसरे दौर में चल रही वैक्सीन की सफलता दर क्या है। प्रथम बीजीय वक्ता प्रो० वी० के० कटियार जी का परिचय सह-संयोजक डॉ० के० के० बाजपेई द्वारा कराया गया और उन्हें उनके बीजीय वक्तव्य हेतु आमंत्रित किया गया। प्रो० वी० के० कटियार जी ने अपना वक्तव्य *Mechanics of Breathing* (साँस लेने की प्रक्रिया) से प्रारम्भ किया और समझाया कि किस प्रकार से गणित के ज्ञान का उपयोग व सही प्रकार से श्वसन प्रक्रिया का पालन करके तरह-तरह के वायरस (विषाणुओं) के मानव शरीर पर आक्रमण के प्रभाव को बहुत हद तक सीमित किया जा सकता है। गणित के उपयोग को प्राणायाम में प्रयोग करते हुए उन्होंने बताया कि किस प्रकार से तथा कितनी मात्रा में भ्रामरी, उद्गीत, अनुलोम-विलोम, कपाल भाति, भस्त्रिका सही प्रकार से किया जाना चाहिए जिससे इसका अधिकाधिक लाभ शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में किया जा सकता है। उनके अनुसार इस प्रकार के सभी गणितीय मॉडल्स में चेंज ऑफ लीनियर मूमेंटम मिकेनिक्स का प्रयोग होता है जो कि डिफ्रेंशियल इक्वेशन आधारित होता है और हल करने पर प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर इस बात को अच्छी और वैज्ञानिक तरीके से समझा जा सकता है। उनके द्वारा तीन ब्रीदिंग तरीकों को गणितीय मॉडल्स के माध्यम से बताया गया जिसमें डीप ब्रीदिंग, पीरियाडिक ब्रीदिंग, तथा आल्टरनेट ब्रीदिंग हैं। उन्होंने बताया कि श्वसन के दौरान कोनिकल आकार में रहने वाली वोकल कार्ड वाइब्रेट करती है यदि उसकी फ्रीक्वेंसी कम या अधिक रहती है तब साँस से संबंधी प्राणायाम से हानि भी हो सकती है, यहाँ पर भी उन्होंने गणित के महत्व को उजागर किया। पेट के मेटाबोलिज्म आधारित मॉडल का वर्णन करते हुए उन्होंने बताया कि 70 प्रतिशत स्थान ठोस आहार के लिए तथा 30 प्रतिशत स्थान तरल पदार्थ शरीर में संतुलित डाइट का द्योतक है। उनके वक्तव्य का निष्कर्ष था कि “गणित के ज्ञान के बिना योग व प्राणायाम का लाभ प्राप्त करना कठिन है।” द्वितीय वक्ता प्रो० मिनी घोष द्वारा “महामारी के गणितीय मॉडल्स” के बारे में बताते हुए कोविड-19 महामारी आधारित गणितीय मॉडल्स एस०आर० (Susceptible & Recovered), एस०आई०आर० (Susceptible, Infected & Recovered) व एस०आई०आर०एस० (Susceptible, Infected, Recovered & Infected) के बारे में बताया गया। इन मॉडल्स को हल करने के उपरांत प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर उनके द्वारा बताया गया कि ईरान में कोरोना महामारी से संक्रमितों के दो शिखर बिन्दु आ चुके हैं तथा तीसरा शिखर बिन्दु पुनः आने की तैयारी में है। इसी प्रकार इटली में भी एक शिखर बिन्दु आ चुका है और संक्रमितों का वक्र नीचे जा रहा है। परन्तु अपने देश भारत में संक्रमितों का चरम बिन्दु अभी आना है और गणितीय मॉडल्स इसके बारे में सही भविष्यवाणी नहीं कर पा रहे हैं। इसका कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि भारत चूँकि एक बड़ी जनसंख्या वाला देश है जहाँ जनसंख्या बहुत अधिक है, स्वास्थ्य सुविधाओं के मामले में विश्व में बहुत पीछे है तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा-निर्देशों का लोग पालन नहीं कर रहे हैं और स्थिति की गंभीरता को न समझते हुए न ही मास्क लगा रहे हैं और न ही शारीरिक दूरी का पालन कर रहे हैं। इसलिए भारत में इस महामारी का प्रकोप कब थमेगा इसके बारे में गणितीय मॉडल्स भविष्यवाणी कर पाने में अभी सक्षम नहीं हैं। अलक्षणी संक्रमितों का भी



पता लगाने और उनका इलाज और आइसोलेट करने के मामले में भी हमारा देश अभी दूसरे प्रभावित देशों से बहुत पीछे है, जिसके चलते भारत में संक्रमण समुदाय में फैलने लगा है। अंत में वेबीनार के संयोजक डॉ० जे० पी० सिंह द्वारा महाविद्यालय प्रबंध समिति के पदाधिकारियों, प्राचार्य, आयोजक समिति के सभी सदस्यों तथा सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। पूरे राष्ट्रीय वेबीनार का सफल संचालन वेबीनार के समन्वयक डॉ० राजीव दीक्षित द्वारा किया गया। इस वेबीनार में महाविद्यालय के डा० संजीव शुक्ल, डा० संजय शुक्ल, डा० ज्योति काला, डा० विजय कुमार, डा० देवेन्द्र कुमार, डा० नरेन्द्र कुमार अवस्थी, श्रीमती रश्मि गुप्ता, श्रीमती सजनी मिश्रा, श्री लल्लन प्रसाद, डा० डी० के० राय, डॉ० मीरा वाणी, डॉ० गीता रानी, श्री हरीश पाल, डॉ० राम कुमार तिवारी, डॉ० वीना पी० स्वामी, डॉ० अमृता सिंह, डॉ० रमा जैन, डॉ० प्रतिभा शुक्ला, डॉ० कुष्णा यादव, डॉ० महेन्द्र पाठक, डॉ० विजय शंकर, डॉ० राजेश राम, डॉ० बैरिस्टर कुमार गुप्ता आदि शिक्षक उपस्थित थे।





राष्ट्रीय वेबिनार भारतीय राजनीति के वर्तमान संदर्भ

28 सितम्बर 2020

राजनीति शास्त्र विभाग

B.S.N.V. Post Graduate College, Lucknow
Department of Political Science is Organizing National Webinar on
"भारतीय राजनीति के वर्तमान संदर्भ"
(On 28 september 2020, 11:00 A:M)


Chief Guest
Prof. Ramdev Bhardwaj
 (vice chancellor)
 Atal Bihari Vajpayee hindi Vishwavidyalay, Bhopal


Special Guest
Prof. Surendra Kumar dwivedi
 (Ex. H.O.D. Department of Pol. Science)
 University of Lucknow


Patron
Prof. Rakesh Chandra
 Principal
 B.S.N.V. P G College


Convenor
Dr. O.P.B. Shukla
 Head
 Department of Pol. Science


Organising Secretary
Dr. Sneha Pratap Singh
 Assistant professor
 Department of Pol. Science

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। भारत में राजनीतिक नेता और दल, मतदान प्रणाली द्वारा सत्ता में आते हैं 18 से अधिक आयु के भारतीय नागरिक वोट देने और अपने नेताओं का चुनाव करने का अधिकार प्राप्त करते हैं हालांकि लोकतंत्र में जनता का शासन होता है लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अभी भी आम आदमी बहुत परेशान हैं क्योंकि हमारे देश की राजनीतिक व्यवस्था के भीतर अनेकों समस्याएं हैं जिसमें मूलभूत समस्या नैतिकता का पतन है हमारे अधिकांश राजनीतिक नेता भ्रष्ट होने के लिए जाने जाते हैं लेकिन उन्हें शायद ही कभी दंडित किया जाता है हमारे राजनेता की ऐसी मानसिकता और व्यवहार देश पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है भ्रष्ट भारतीय राजनीति के कारण देश की आम जनता सबसे अधिक पीड़ित है दूसरी ओर सरकार के सदस्य अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति में अपनी शक्ति और स्थिति का दुरुपयोग करते हैं।

आजादी के बाद भारत में विकास सभी क्षेत्र में हुआ है किंतु भारत में जिस स्तर का विकास विगत 70 वर्षों में हुआ वह पर्याप्त नहीं है कोरोना महामारी के समय में यह बात स्पष्ट हो गई है हम बुनियादी दृष्टि से बहुत



अच्छी स्थिति में नहीं है चाहे वह स्वास्थ्य क्षेत्र हो, आर्थिक निर्भरता का क्षेत्र हो, राज्यों के बीच अंतर्विरोध की बात हो, केंद्र राज्य के बीच विवाद का विषय हो इन सभी क्षेत्रों में हम अव्यवस्थित ही दिखे।

इन्हीं विषयों के संदर्भ में दिनांक 29 सितम्बर 2020 को राजनीति शास्त्र विभाग द्वारा भारतीय राजनीति के वर्तमान संदर्भ विषय पर ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया इस वेब संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रामदेव भारद्वाज जी सम्मिलित हुए जिन्होंने राजनीति विज्ञान, लोक प्रशासन, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, समाज विज्ञान, भाषा, साहित्य, संस्कृति, इतिहास आदि विषयों पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि लखनऊ विश्वविद्यालय की राजनीति शास्त्र विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर सुरेंद्र कुमार द्विवेदी जी थे वर्तमान में वह लखनऊ विश्वविद्यालय के कार्यकारिणी परिषद के सदस्य हैं।

संगोष्ठी का प्रारंभ ज्ञान की देवी मां सरस्वती की वंदना से हुआ इसके पश्चात महाविद्यालय की प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री टी एन मिश्रा जी द्वारा शुभाशीष वक्तव्य दिया गया तथा आधुनिक भारतीय राजनीति के समसामयिक प्रश्नों को रेखांकित किया गया, इसके पश्चात महाविद्यालय की प्रबंध समिति के प्रबंधक/मंत्री श्री रत्नाकर शुक्ल जी का उद्बोधन हुआ तत्पश्चात महाविद्यालय के प्राचार्य राकेश चंद्रा ने मुख्य अतिथि का परिचय तथा स्वागत किया मुख्य अतिथि के साथ आपने सभी सम्मानित अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर सुरेंद्र कुमार द्विवेदी जी का विद्वतापूर्ण व्याख्यान हुआ। प्रोफेसर द्विवेदी जी ने आधुनिक भारतीय राजनीति के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों पर अपना विचार दिया। द्विवेदी जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि आज की भारतीय राजनीति का सबसे बड़ा दोष यह है कि नैतिकता का पतन हुआ है और यह पतन नेता, मतदाता, तथा संस्थाओं में सभी जगह हुआ है। प्रोफेसर द्विवेदी जी ने राजेंद्र प्रसाद, महात्मा गांधी, प्लेटो और अरस्तू के वक्तव्य के माध्यम से बताया कि यह सभी विद्वान मानते थे कि राजनीति में सबसे ज्यादा महत्व नैतिकता को दिया जाना चाहिए प्रोफेसर द्विवेदी जी ने गांधी जी द्वारा नेता की परिभाषा को बताते हुए कहा कि नेता वह है जो किसी प्रकार के पद की इच्छा नहीं रखता। समाज सेवा ही उसका कर्तव्य है, और इस कर्तव्य में वह सदैव ईश्वर का स्मरण करें क्योंकि ईश्वर सद्गुणों का स्रोत हैं।

प्रोफेसर द्विवेदी जी ने वर्तमान राजनीति के सकारात्मक पक्ष को स्पष्ट करते हुए बताया कि आधुनिक समय में ई-गवर्नेंस सुशासन के लिए अच्छा प्रयास है उन्होंने राजनीति में स्मार्ट का सूत्र दिया इसकी व्याख्या करते हुए बताया कि राजनीति में सरलताए नैतिकता, उत्तरदायित्व और निर्णयों में पारदर्शिता होनी चाहिए यदि राजनीति में हम इन बातों को ले आते हैं तो निश्चित रूप से हमारा वर्तमान राजनीति जन कल्याण में होगा।

प्रोफेसर द्विवेदी जी के पश्चात मुख्य अतिथि कुलपति प्रोफेसर रामदेव भारद्वाज जी का व्याख्यान हुआ प्रोफेसर रामदेव भारद्वाज जी भी राजनीति में हो रहे नैतिकता के पतन पर चिंतित थे प्रोफेसर भारद्वाज जी ने कहा कि भारतीय राजनीति की आत्मा भारतीय संविधान तो पवित्र है किंतु संविधान के अनुरूप समाज में आचरण का अभाव है, और यह हर जगह देखने को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि भारतीय राजनीति की आत्मा संविधान तो आत्मा के समान ही पवित्र है, किंतु संविधान पर ही टिकी राजनीति का स्वरूप विकृत हो गया है भारद्वाज जी ने इस समस्या के समाधान में कहा कि विश्वविद्यालय, महाविद्यालय सहित सभी विद्यालयों के अध्यापक, छात्र



शक्ति, युवा शक्ति ही भारतीय राजनीति को विकृत स्वरूप से बचा सकती है।

अगली कड़ी में देश के विभिन्न क्षेत्रों से प्रतिभागियों द्वारा प्रश्न किए गए जिसका उत्तर मुख्य अतिथि प्रोफेसर रामदेव भारद्वाज जी ने तथा विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर सुरेंद्र कुमार द्विवेदी जी ने दिया। सर्वाधिक प्रश्न इस बात से संबंधित थे कि नैतिक उत्थान कैसे किया जाए। इसके उत्तर में दोनों विद्वानों का मत था कि नैतिक पतन समाज के सभी वर्ग में है अतः सुधार भी हर स्तर पर आवश्यक है राजनेता, सरकारी कर्मचारी तथा आम नागरिक निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में कार्य करें, देश का प्रत्येक नागरिक राष्ट्र से प्रेम करे, उसका सम्मान करें और अपने कार्य को राष्ट्र का कार्य समझे और पूरी निष्ठा से राष्ट्रहित में कार्य करें इसके साथ ही विधिक रूप से भी समाज से भ्रष्टाचार को समाप्त करने का प्रयास किया जाए राजनीतिक नेता, राजनीतिक दल, राजनीति का व्यवसायीकरण न होने दें और प्रधान सेवक बनने की दिशा में अग्रसर हों।

कार्यक्रम का संचालन डॉ० ओ० पी० बी० शुक्ल ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन स्नेह प्रताप सिंह द्वारा किया गया संगोष्ठी में महाविद्यालय के सभी सम्मानित आचार्य सम्मिलित रहे और अपने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये।

★ ★ ★



राष्ट्रीय वेबिनार गाँधी की अपरिहार्यता

2 अक्टूबर 2020

राष्ट्रपिता की १५०वीं जयंती के अवसर पर

बी एस एन वी पीजी कॉलेज, लखनऊ

सैद्धान्तिक विकास समिति द्वारा आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार

दिनांक: 02 अक्टूबर 12:30 माध्यह्न

“गाँधी की अपरिहार्यता”

मुख्य वक्ता

प्रो० अरुण दिवाकर नाथ बाजपेयी
(राष्ट्रवादी चिंतक, कवि, पूर्व कुलपति, अमरावती)

प्रभावे

संयोजक

आयोजन सचिव

डॉ० परिकीश सिन्हा

डॉ० ज्योति काला

डॉ० अंकुश किशोरी

बप्पा श्री नारायण वोकेशनल महाविद्यालय लखनऊ के द्वारा गांधी जयंती के अवसर पर “गांधी की अपरिहार्यता” विषय पर एक राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। वेबीनार में मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात राष्ट्रवादी चिंतक प्रो० ए.डी.एन. बाजपेई सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ संयोजक डॉ० ज्योति काला के द्वारा सभी के औपचारिक स्वागत द्वारा हुआ। महाविद्यालय के प्रबंधक श्री रत्नाकर शुक्ला ने वेबीनार में अपने विचार रखते हुए कहा कि गांधी की ग्राह्यता पूरी दुनिया भर में है। कुछ लोग अहिंसा को कमजोरी मानते हैं लेकिन अधिकांश ने इसे प्रमुख औजार माना है, आत्मनिर्भर भारत की मुहिम वर्तमान में जोरों



पर है इसमें गांधी का ही दर्शन निहित है। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० राकेश चंद्र ने मुख्य वक्ता प्रो० अरुण दिवाकर नाथ बाजपेई का परिचय प्रस्तुत करते हुए वेबीनार में उनका औपचारिक स्वागत किया। महाविद्यालय की प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री टी.एन. मिश्र ने अपने संबोधन में कहा कि गांधी के 150 वर्ष हो गए हैं व्यावहारिक रूप से हम इस दिन को छुट्टी के रूप में जानते हैं जिस पर हमें विचार करने की आवश्यकता है। वर्तमान भारत में बढ़ते अपराध विशेषकर महिलाओं पर होने वाले अपराधों पर उनके द्वारा चिंता व्यक्त की गई। उन्होंने कहा कि जो समाज महिलाओं की इज्जत नहीं करता वह विकास के पथ पर कभी आगे नहीं जा सकता। शिक्षा व्यवस्था की खामियों को भी इस दौरान उन्होंने इंगित किया। उन्होंने बताया कि गांधीजी को गीता से काफी प्रेरणा मिली है लेकिन यदि हम अध्यापकों से यह प्रश्न पूछें कि कितने अध्यापकों ने गीता पढ़ी है तो इसका जो उत्तर होगा वह निराश करने वाला होगा। हम सेकुलरिज्म के नाम पर गीता आदि ग्रंथ नहीं पढ़ा पा रहे हैं यह दुर्भाग्यपूर्ण है। आज का दिन आत्मचिंतन का है, विशेषकर शिक्षकों के लिए। गांधी ने आत्मानुशासन पर बल दिया। आज जनमानस में गांधी के जीवन में जो चीजें थी उनका अभाव दिखाई पड़ता है हमें इस पर चिंतन करना होगा तथा एक बेहतर समाज बनाने के लिए प्रतिबद्धता दिखानी होगी।

मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार रखते हुए प्रो० बाजपेई ने कहा कि इस वेबीनार के विषय के निर्धारण के संदर्भ में जब संयोजिका ने मुझसे संपर्क किया तो एक विचार बना कि विषय गांधी की प्रासंगिकता या अनिवार्यता रखा जाए किंतु यह दोनों विषय अपने आप में अलग अर्थ का निरूपण करते हैं। अनिवार्य चीजें वह हैं जो हमारे जीवन जीने के लिए आवश्यक है जबकि अपरिहार्य चीजें वह हैं जिनके बिना जीवन संभव ही नहीं है। गांधी का दर्शन कुछ ऐसा ही है इसलिए विषय निर्धारण के रूप में गांधी की अपरिहार्यता तय किया गया। तत्पश्चात उन्होंने गांधी के जीवन दर्शन के संदर्भ में विस्तृत विचार रखे। उन्होंने कहा कि यह गांधी का ही विराट व्यक्तित्व है जिन्होंने संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में पिरोया। यदि हम आज की स्थिति पर विचार करें तो विविधताओं भरे इस देश में कोई भी व्यक्ति, दर्शन अथवा विचार ऐसा नहीं है जो राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो सके, सभी के लिए सर्वमान्य हो। जबकि गांधी की सर्वमान्यता आज भी है। पर्यावरण के संदर्भ में सस्टेनेबल डेवलपमेंट को हम गांधी के दर्शन के माध्यम से ही सुनिश्चित कर सकते हैं क्योंकि गांधी के दर्शन में प्रकृति के संरक्षण को स्पष्टतः महत्व दिया गया है। विश्व शांति, सामाजिक समरसता, आर्थिक विकास, तकनीकी विकास आदि को सुनिश्चित करने के लिए गांधी ही एकमात्र विकल्प है।

कार्यक्रम के अंत में वेबीनार के आयोजन सचिव डॉ० मंजुल त्रिवेदी ने मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आपने हम सभी को गांधी को समझने की एक नई दृष्टि दी है।





अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार

प्राचीन इतिहास निर्माण के स्रोत एवं समस्याएं

8 अक्टूबर 2020

प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग

B.S.N.V. Post Graduate College, (K.V.) Charbagh, Lucknow
Department of Ancient Indian History is Organizing International Webinar on
"Sources and Problems in Reconstruction of Ancient History"
"प्राचीन इतिहास निर्माण के स्रोत एवं समस्याएँ"
On Dated 08th October 2020 @ 12:00pm to 02:00pm

 Chief Guest Shri T.N. Mishra President, B.S.N.V. Institute, Lucknow	 Chief Guest Prof. D.P. Tiwari (Vice Chancellor) Veer Kunwar Singh University of Arrah, Bihar (VKSU, Arrah, Bihar)	 Distinguished Speaker Prof. S.N. Kapoor Ex. Head of Dept. AH and Archaeology, University of Lucknow	 Keynote Speaker Prof. Abhay Kumar Singh Director of Indian Cultural Centre, Embassy of India, Tehran (Iran)	 Invited Speaker Prof. Piyush Bhargava, Dept. AH and Archaeology, University of Lucknow
 Chief Patron Shri Ratnakar Shukla Secretary/Manager, B.S.N.V. PG College, Lucknow	 Patron Prof. Rakesh Chandra Principal, B.S.N.V. PG College, Lucknow	 Organizer Dr. Anuradha Vinayak Ex. Head, Research Prof. Dept. AH, B.S.N.V. PG College, Lucknow	 Chairman Dr. Durgesh Kumar Guest Asst. Prof. B.S.N.V. PG College, Lucknow	 Organizer Dr. Nilima Gupta Associate Prof. Dept. History (MH) B.S.N.V. PG College, Lucknow

E-Certificate of Participation will be given to all the attendees, B.S.N.V. (PG), College, Charbagh, Lucknow

प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, बी.एस.एन.वी.पी.जी. कॉलेज, लखनऊ द्वारा दिनांक 08/10/2020 को एक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार "प्राचीन इतिहास निर्माण के स्रोत एवं समस्याएँ" का आयोजन किया गया। इस वेबिनार में विशिष्ट वक्ताओं, प्रो० डी०पी० तिवारी, मुख्य अतिथि, कुलपति, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, प्रो० शैलेन्द्र कपूर, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, प्रो० अभय कुमार सिंह, मुख्य वक्ता, डॉयरेक्टर आफ इंडियन कल्चर सेंटर, एम्बेसी आफ इंडिया, तेहरान (ईरान) तथा प्रो० पीयूष भार्गव, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ने सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किये।

प्राचार्य, प्रो० राकेश चन्द्रा जी ने सभी वक्ताओं का स्वागत करते हुए अपने संबोधन में कहा कि स्रोत ही इतिहास को जानने व समझने में सहायता प्रदान करते हैं। इतिहास में प्राचीन घटनाओं को क्रमबद्ध तरीके से समझाया जाता है। इतिहास में स्रोत, स्मारक, सिक्के, अभिलेखों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इतिहास में किसी घटना की तिथि निर्धारित करने के लिए सी-14 विधि Potassium argon dating का उपयोग करते हैं।

डॉ० दुर्गेश कुमार जी (संयोजक) अपने विषय प्रवर्तन में कहते हैं कि, इतिहास शब्द के अर्थ के संदर्भ में कुछ विद्वानों का मानना है कि हिस्ट्री यूनानी संज्ञा *Loropla* जिसका अर्थ—सीखना है, से लिया गया और कुछ



लोग जर्मन शब्द Geschichte से हिस्ट्री की उत्पत्ति मानते हैं जिसका अर्थ है—घटित होना। जबकि अन्य इतिहासकार History शब्द की उत्पत्ति यूनानी शब्द Historia से हुई बताते हैं, और जिसका आशय है—‘जानना’ अथवा ‘ज्ञात होना’।

इतिहास का शाब्दिक अर्थ है—ऐसा निश्चित रूप से हुआ होगा। इससे स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास का संबंध अतीत से होता है वह अतीत जिसमें लाखों घटनाएं, अनगिनत विरासतें और कई रहस्य छुपे हुए हैं। इतिहास क्यों? तो जिस तरह तीर को दूर तक पहुँचाने के लिए धनुष की डोर को कान के पीछे तक खींचना अनिवार्य है, उसी प्रकार यदि वर्तमान एवं भविष्य को समझना चाहते हैं तो इतिहास (अतीत) का अध्ययन अनिवार्य है। इतिहास के इसी महत्व को देखते हुए कौटिल्य ने कहा था—“राजा को प्रतिदिन कुछ समय इतिहास श्रवण में लगाना चाहिए।” एक विचार के अनुसार इतिहास अतीत और वर्तमान के बीच का अनवरत संवाद है। व्यूरी के अनुसार—“इतिहास विज्ञान है, न कम न ज्यादा”। भारतवर्ष अर्थात् भरत का देश। भरत नामक एक प्राचीन राजवंश के नाम पर इस देश को भारतवर्ष कहा गया। जिस भारतवर्ष के नाम से हमारे देश का नाम पड़ा उनका राज्य सरस्वती तथा यमुना नदियों के बीच के प्रदेश में था। वही जैनधर्म के अनुसार उनके प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र सम्राट भरत के नाम पर पड़ा। भरत, भारत के पहले चक्रवर्ती सम्राट थे। यूनानियों ने इस देश को इंडिया (India) कहकर पुकारा। सर्वप्रथम इंडिया नाम का प्रयोग छठी-पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में इतिहास के पिता नाम से विख्यात हेरोडोटस ने किया था। तदुपरांत इंडिया शब्द का प्रयोग मेगस्थनीज ने किया। यह बात ध्यान देने योग्य है कि हेरोडोटस द्वारा वर्णित इंडिया से संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप का बोध होता है। पुराणों तथा अशोक के अभिलेखों में हमारे देश का नाम जंबूद्वीप मिलता है। खारवेल के हाथी गुम्फा अभिलेख में सर्वप्रथम प्राकृत में भर घवस (भारतवर्ष) का विवरण मिलता है। प्रदेश के रूप में सबसे पहले भारत का वर्णन पाणिनि की अष्टाध्यायी में है। सर्वप्रथम 262 ईसवी (तीसरी सदी) में ईरान के शासक शाहपुर प्रथम के नक्श-ए-रुस्तम अभिलेख में इस देश का नाम हिंदुस्तान मिलता है। प्राचीन इतिहास निर्माण के स्रोत एवं समस्याओं के संदर्भ में साहित्यिक, पुरातात्विक एवं विदेशी यात्रियों की यात्रा वृत्तांत के संबंध में रोचक जानकारी दी।

प्रो० डी०पी० तिवारी जी (मुख्य अतिथि) अपने व्याख्यान में कहते हैं कि, स्रोत इतिहास की रीढ़ हैं। किसी देश के काल खण्ड को पता लगाने के लिए इतिहासकार श्रम करता है जिसके कारण उसकी आलोचना भी होती है। शास्त्र दर्शन में इतिहास को जानने के स्रोतों की सत्यता की जांच होनी चाहिए, उसे तत्कालीन नकारना अथवा स्वीकारना नहीं चाहिए। प्राचीनकाल के विद्वान नक्षत्रों की स्थिति को देखकर तिथि तथा मार्ग का चयन करते थे। इतिहासकार द्वारा रचित इतिहास की आलोचना करने की उपेक्षा करके उसमें त्रुटियों को सुधारना चाहिए। कुछ अभिलेख ऐसे भी हैं जिन पर लेखक का नाम नहीं दिया है लेकिन संबंधित सामग्री मिलने से उसके काल को ज्ञात किया जा सकता है। Potassium argon dating, Radio carbon dating यह भी पूरी तरह से सटीक नहीं होती हैं इसमें भी त्रुटि आ सकती है।

सिक्कों पर मिलने वाली आकृति से हम उसके इतिहास का पता लगा सकते हैं। गुप्तकाल के सिक्कों में मिलावट मिलती है।



- Art Monument मंदिर, धार्मिक भवन ये उस समय के लोगों के रहन-सहन को प्रदर्शित करता है।
- स्तूप निर्माण मिट्टी के स्तूप की सहायता से हम प्राचीन इतिहास को समझने में सामर्थ्यवान हो पाए हैं।

प्रो० अभय कुमार सिंह, मुख्य वक्ता, ने व्याख्यान में बतलाया कि अल्बरूनी का जन्म 973 ईसवी में खारिज्म खीवा में हुआ था। उसका पूरा नाम 'अबूरेहान मुहम्मद इब्न अहमद अल्बरूनी' था। टेसियस ईरान का राजभवन था? सिंकदर के पश्चात के लेखकों में 3 राजदूतों—मेगस्थनीज, डाइमेकस, डायनोसीयस के नाम उल्लेखनीय हैं जो युनानी शासकों द्वारा पाटलिपुत्र के मौर्य दरबार में आया था।

दूसरी शताब्दी ईस्वी में टालमी ने भारत का भूगोल लिखा था। प्लिनी का ग्रंथ प्रथम शताब्दी ईस्वी का है। पेरिप्लस का लेखक 80 ई. के लगभग हिंद महासागर की यात्रा पर आया था। छठी सदी ईसवी में खुसरो प्रथम अमीरवाद ने आदर्शप्रथम के शिवशासन को समझने के लिए ईरान के राष्ट्रीय इतिहास लेखन की पहल की। इतिहास को सिद्ध करने के लिए साक्ष्य की प्रमाणिकता की आवश्यकता पड़ती है। इतिहास लेखन से भावी पीढ़ियों को ज्ञान प्राप्त होता है। फाहयान ने 8000 मील की यात्रा की थी, वह स्थल मार्ग से आया था तथा जल मार्ग से गया था। पाणिनि की अष्टाध्यायी में 'स्त्री' शब्द का उल्लेख मिलता है। ह्वेन्सांग का जन्म 600 ई. के लगभग चीन में हुआ था। वह चीन के होनन प्रांत के चीन-लिऊ नामक स्थान पर जन्मा था। उसके पिता का नाम चेन-हुई था।

प्रो० शैलेन्द्रनाथ कपूर के व्याख्यान के अनुसार

इतिहास लेखन एक सच्ची साधना है क्योंकि इससे वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को अतीत में घटित घटनाओं का यथार्थ ज्ञान होता है और इसके लिए ज्ञानार्जन के स्रोत का असाधारण मार्ग मिलता है। छठी-पांचवी शताब्दी ईसापूर्व में जब भारत में ही नहीं सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप में धार्मिक पुर्नजागरण और सामाजिक पुर्नजागरण का युग था, जब भारत में भगवान महावीर और भगवान बुद्ध का आविर्भाव हुआ, तब चीन में कन्फ्यूशियस और Loueses हुए। ये बड़ी महत्वपूर्ण बात है कि जो यात्री हमारे देश में प्राचीनकाल से आते रहे और जिनके विवरण हमें महत्वपूर्ण सूचनाएं देते रहे, उनमें से बहुत विवरण अभी भी अप्राप्त हैं।

प्रो० पीयूष भार्गव के अनुसार

दो राजाओं के बीच युद्ध होना हम स्वीकार कर सकते हैं लेकिन युद्ध की पहल किसने की, तथा कौन सा राज्य ज्यादा आक्रामक था यह पता लगाना थोड़ा कठिन है। पुराणों के अनुसार गौतमीपुत्र शातकर्णि सातवाहन वंश का तेईसवाँ राजा था उसके पिता का नाम शिवस्वाति तथा माता का नाम गौतमी बलश्री मिलता है। दो नासिक से तथा एक कार्ले से उसका अभिलेख मिलता है और उसने क्षहरात नरेश नहपान तथा उषावदात को पराजित किया। कालिदास जी के विषय में भी कई मतभेद हैं कुछ विद्वान उनके जन्म का समय गुप्तकाल के समय मानते हैं। जैन साहित्य सूत्र कृदंग, स्थानग, भगवती सूत्र आदि को कब लिखा गया इसे पता करना भी कठिन है भारत में तमिल, संस्कृत एक प्राचीन भाषा हैं।

भौतिक अवशेष :

ये पूरी तरह से प्रामाणिक नहीं होता है लेकिन इतिहास को समझने में सहायक है। जैसे एक मूर्ति को उसकी वेशभूषा को देखकर पता लगाया जा सकता है कि वह किस काल की है।



Type of Pottery

1. गैरिक मृदभांड की खोज सर्वप्रथम पुराविद बी.बी. लाल ने 1949 में बिसौली तथा बिजनौर के पुरास्थलों की खुदाई के दौरान किया।
2. चित्रित धूसर मृदभांड की प्राप्ति सर्वप्रथम अहिच्छत्र के टीले की खुदाई के दौरान 1940-44 ईसवी में हुई।
3. कृष्ण लोहित मृदभांड ऐसे मृदभांडों का भीतरी व बाहरी चारों ओर का भाग काला व शेष बाहरी भाग ईंट के रंग का लाल मिलता है।
4. उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभांड इन मृदभांडों को एन.बी.पी. मृदभांड कहा जाता है। ये ईसा पूर्व छठी शताब्दी के विशिष्ट मृदभांड हैं।

डॉ० नीलमा गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा—

“मैं चंद पंक्तियों के साथ आप सबका हृदय से धन्यवाद करती हूँ, इतिहास अतीत का अध्ययन मात्र न होकर, अतीत का पुनर्बोधन है। जो किसी न किसी रूप में हमारे वर्तमान में जीवंत है, मुझे ऐसा लगता है कि “प्राचीन इतिहास के स्रोत” एक प्यारे भवन के बंद कमरे के समान है, जहाँ झिरियों से छन-छन कर आता मध्यम प्रकाश अपना अतीत सुनाने के लिए शोर मचा रहा है, हम उसे सुनते तो हैं, पर समझ नहीं पा रहे हैं उसे समझने के लिए हमें धैर्य, निष्पक्षता और संवेदना की भी आवश्यकता है तभी हम अतीत की घटनाओं को वर्तमान से जोड़ पाएंगे”।

इस अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार में 617 लोगों ने रजिस्ट्रेशन करवाया, जिसे यूट्यूब पर 517 लोगों ने देखा और जूम एप पर 100 लोगों ने देखा।





राष्ट्रीय वेबिनार

आत्मनिर्भर भारत-अवसर और चुनौतियां

13 अक्टूबर 2020

इतिहास विभाग (एम.आई.एच.)

For any queries:
Contact:
9415341110
9839078671

Department of History (MIM), B.S.N.V. Post Graduate College, Lucknow
is organizing a National Webinar on the topic

आत्मनिर्भर भारत - अवसर और चुनौतियां
(Atmanirbhar Bharat: Opportunities and Challenges)
on 13th October, Tuesday at 11:00 A.M.

EMINENT SPEAKERS

Chief Patron
Shri T.N. Mishra
President
B.S.N.V. P.G. College
Lucknow

Chief Patron
Shri Ratnakar Shukla
Secretary/Manager
B.S.N.V. P.G. College
Lucknow

Keynote Speaker
Prof. Harikesh Singh
Ex. Vice Chancellor, I.P. University
Ex. Head & Dean, F.O.E., BBS
Former Director, NEPA, New Delhi

Keynote Speaker
Prof. Yogeshwar Tewari
HOD, Deptt. of History
Director, Institute of Gandhian Thought
and Peace Studies, University of Allahabad

Keynote Speaker
Dr. Arun Kumar Singh
HOD and Associate Professor
Deptt. of Economics,
IDPG College, Jaunpur

Patron
Shri Rakesh Chandra
Principal
B.S.N.V. P.G. College
Lucknow

Convener and Head
Dr. Vandana Khatun
Associate Professor
Deptt. of History
B.S.N.V. P.G. College
Lucknow

Co-Convener
Dr. Nisha Gupta
Associate Professor
Deptt. of History
B.S.N.V. P.G. College
Lucknow

e-Certificate of Participation will be given to all the registered attendees

इतिहास विभाग (एम0आई0एच0) द्वारा दिनांक: 13 अक्टूबर, 2020 को विषय- “आत्मनिर्भर भारत- अवसर और चुनौतियां” पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। भारतीय परम्परा का निर्वाह करते हुये सर्वप्रथम सरस्वती वन्दना से कार्यक्रम का आरम्भ किया गया। डा0 वन्दना कलहंस ने विभिन्न स्थानों से आये हुये विद्वानों का परिचय देते हुये बी0एस0एन0वी0 महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्री टी0एन0 मिश्रा जी को आशीर्वचन हेतु आमन्त्रित किया। आपने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि किसी भी देश का इतिहास उसके वजूद को दर्शाता है, आत्मनिर्भरता भारत का प्राणतत्व है। तत्पश्चात् महाविद्यालय के प्रबन्धक श्री रत्नाकर शुक्ला जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि महात्मा गाँधी ने सर्वप्रथम आत्मनिर्भरता पर विस्तार से विचार प्रकट किये थे। तत्पश्चात् महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 राकेश चन्द्र जी ने वेबिनार में आये हुये विद्वानों का स्वागत करते हुये अपने विचार प्रकट किये। आपने राज्य आत्मनिर्भरता पर पाश्चात्य विचारकों के विचार पर प्रकाश डाला।

डा0 वन्दना कलहंस ने विषय प्रवर्तन करते हुए प्रमुख वक्ता डा0 हरिकेश सिंह को व्याख्यान के लिये आमन्त्रित किया। प्रो0 सिंह जे0पी0 विश्वविद्यालय में कुलपति तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय में संकायाध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे हैं। आपने आत्मनिर्भर भारत विषय पर विस्तृत विचार रखें। आपने सृजन तत्व



को संरक्षित रखने के अर्थपूर्ण अर्थशास्त्र पर बल देते हुये कहा कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त सम्पदा को केवल जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये दोहन किया जाय, अनावश्यक दोहन समाज के लिये धातक होगा। आपने वितरण-व्यवस्था में प्रशासन की जिम्मेदारी तय करते हुये कहा कि अगर विकेन्द्रीकरण हमारी प्राथमिकता में नहीं है तो आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न पूरा नहीं हो सकता। शुचिता, सत्यता, न्यायपूर्णता एवं विकेन्द्रीकरण यदि वितरण में नहीं है तो विकास के सारे पैरामीटर अनुपयुक्त सिद्ध होंगे। आपने चीनी व्यापार को भारत के लिये अनुपयुक्त बताया।

कार्यक्रम के अगले सोपान पर बढ़ते हुये इलाहाबाद विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो० योगेश्वर तिवारी जी को व्याख्यान के लिये आमन्त्रित किया गया। आप इंस्टिट्यूट ऑफ गॉंधीयन थॉट एण्ड पीस स्टडीज इलाहाबाद में निदेशक पद पर भी अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं। आपने भारत की गौरवपूर्ण संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं भारत में आत्मनिर्भरता की प्राचीनता पर प्रकाश डालते हुये कहा कि सनातन धर्म का आधार आत्मनिर्भरता थी। उन्होंने भारत में आत्मनिर्भरता के इतिहास पर चर्चा करते हुये कहा कि सिन्धु घाटी की सभ्यता, वैदिककाल, उत्तरवैदिक काल पर हम दृष्टि डालें तो हमें ज्ञात होता है कि भारत समृद्ध था। प्राचीन भारत से यूरोप व चीन तक से व्यापार होता था। गुप्त काल से भारत स्वर्ण काल में प्रवेश करता है। तदन्तर आक्रान्ताओं द्वारा भारत को लूटे जाने पर भी आर्थिक आत्मनिर्भरता बनी रही। मुस्लिम शासन स्थापित होने के बावजूद भी भारतीय अर्थव्यवस्था अप्रभावित बनी रहीं। उस समय वैश्विकअर्थ व्यवस्था की जी०डी०पी० में 32 प्रतिशत से भी ज्यादा का योगदान था। 17-18वीं सदी में अंग्रेजी शासन की स्थापना के साथ अंग्रेजों ने भारत की अर्थव्यवस्था को बर्बाद करते हुये विकलांग बना दिया। आपने कहा कि स्वतन्त्रता और आत्मनिर्भरता एक दूसरे के पूरक हैं। गाँव आत्मनिर्भर होगा, तो जिला आत्मनिर्भर रहेगा, जिला आत्मनिर्भर होगा तो देश आत्मनिर्भर होगा।

कार्यक्रम के अन्तिम सोपान में टी०डी०पी०जी० कालेज जौनपुर के अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ० अरुण कुमार जी ने विद्वानों और विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करते हुये अपने व्याख्यान पी०पी०टी० के माध्यम से शीर्षक “आत्मनिर्भर भारत अभियान-आशाओं का भ्रमजाल” में बताया कि आत्मनिर्भर भारत अभियान निश्चय ही महत्वाकांक्षी व उपयोगी योजना है। वर्तमान परिस्थिति में एकमात्र विकल्प है, क्योंकि विश्व व्यापार संगठन में हमारी सदस्यता, समझौता, नियमों को मानने की विवशता को सुनिश्चित करती है। किसी भी देश से आयात को हम इनकार नहीं कर सकते। हम अपनी आवश्यकता यदि पूरी कर लें तो, हमें खरीदने की जरूरत ही न पड़े। देश को हजारों-करोड़ के भुगतान से बचाया जा सकता है। आपने कहा कि भारत में घोषित वित्त पैकेज व्यर्थ हैं और इन घोषणाओं का हकीकत से दूर-दूर का सम्बन्ध नहीं है। आने वाले समय में यह कितना सफल होगा कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता। किसी भी करिश्मे की उम्मीद करना व्यर्थ है।

अन्त में जिज्ञासु श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर दिये गये। डा० नीलिमा गुप्ता के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ ही वेबीनार का समापन हुआ।





राष्ट्रीय वेबिनार “विश्व हाथ धुलाई दिवस”

15 अक्टूबर 2020

B.S.N.V. P. G. College, Lucknow



Special Lecture on
Global Hand washing day
(विश्व हाथ धुलाई दिवस)



15 october, 2020

Timing- 12 Noon to 1 P:M

Guest Speaker

Dr. Manish Kumar

M.D.(Pediatrics), PDCC, FCC

Please Join zoom Meeting

I.D.- 81772716170

Passcode-516865

Link

<https://us02zoom.us/j/81772716170?pwd=9WpZTGhNcVJlSVhRNGNEUjRlWmZlbnRlPS09>

Principal

Prof. Rakesh Chandra

“विश्व हाथ धुलाई दिवस” के अवसर पर दिनांक 15 अक्टूबर 2020 को बप्पा श्री नारायण वोकेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय के द्वारा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जूम के माध्यम से विद्यार्थियों एवं अभिभावकों हेतु जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ कोऑर्डिनेटर डॉ० ज्योति काला के वक्तव्य के द्वारा हुआ जिसमें उन्होंने आज के इस दिवस की महत्ता तथा हाथ धोने के महत्व को बताया। तत्पश्चात महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० राकेश चंद्र ने विद्यार्थियों को स्वच्छता के संदर्भ में जागरूक किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान कोरोना संकट के दौर में यह विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है कि हम उत्तम स्वास्थ्य हेतु स्वच्छता



के नियमों एवं समय-समय पर सरकार द्वारा जारी की जाने वाली एडवाइजरी का पालन अवश्य करें। विश्व हाथ धुलाई दिवस के संदर्भ में उन्होंने कहा कि यह अवसर हम सभी को हाथ धोने के महत्व का आभास कराने वाला है। हमें अपने दैनिक क्रियाकलापों में इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि विभिन्न प्रकार के वायरस और बैक्टीरिया से बचने के लिए अपने हाथों को बार-बार धुलते रहे।

इस अवसर पर विशेषज्ञ चिकित्सक डॉ० मनीष कुमार भी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर उपस्थित हुए तथा उन्होंने पी०पी०टी० प्रस्तुतीकरण के द्वारा हाथ धोने के महत्व एवं क्रियाविधि आदि की चर्चा की। डॉ० मनीष ने विभिन्न अध्ययनों के प्राप्त निष्कर्षों का उल्लेख करते हुए यह बताया कि कैसे हम नियमित अंतराल पर हाथ धुल कर बीमारियों से होने वाली मृत्यु दर एवं उनकी भयावहता को कम कर सकते हैं। उन्होंने इस दौरान हाथों को धोने की मानक क्रियाविधि का प्रदर्शन भी किया और बताया कि हमें दोनों हथेलियों को आपस में मिलाकर सामान्य रूप से रगड़ कर प्रत्येक हिस्से को भलीभांति साबुन से धुलना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन डॉ० ज्योति काला तथा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन डॉ० मंजुल त्रिवेदी ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षकगण, विद्यार्थी तथा उनके अभिभावक भी सम्मिलित हुए।





National Webinar

MISSION NARI SHAKTI 2020

23th October 2020



The poster for the 'Mission Shakti 2020' webinar features the following details:

- Logos:** The Government of India emblem, the 'Mission Shakti' logo with the tagline 'सारी सुनवा, सारी संभाला, सारी सम्भालेयल', and a stylized face logo.
- Event Title:** बप्पा श्रीनारायण वोक्शनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ मिशन शक्ति-2020
- Date and Time:** दिनांक-23 अक्टूबर, 2020। समय- 11: बजे
- Participants:**
 - मुख्य संरक्षक: श्री टी एन मिश्र, अध्यक्ष, प्रबंध समिति
 - मुख्य संरक्षक: श्री राजाकर शुक्ल, अध्यक्ष
 - प्राचार्य: श्री राकेश चन्द्र
 - मुख्य वक्ता: डॉ ज्योति काला
 - संयोजक: डॉ मधु भटिया
 - आयोजन सचिव: डॉ मंजुल विवेदी
 - संचालक: डॉ अजोनि अस्थाना
- Program:** कार्यक्रम- संभाषण, परिचर्चा, काट्य पाठ, शपथ ग्रहण
- Organizing Committee:** आयोजन समिति- डॉ अरविन्द तिवारी, डॉ प्रणव मिश्र, डॉ विजय शंकर, डॉ शशिकांत
- Contact:** प्रतिभाग हेतु इच्छुक विद्यार्थी संपर्क करें- 9453135971

The UP government launched 'Mission Shakti Campaign' to ensure the safety and protection of the pride of women in the state. The campaign aims that the educational institutions must connect education with good cultural values (Sanskar) as a part of “**Mission Shakti.**” With the objective of propagating the ambitious campaign for the empowerment of women and eradication of crimes against them, a webinar was organized on 23 October, 2020. The Webinar was conducted by **Dr. Anjali Asthana**. **Dr. Madhu Bhatiya**, convener, welcomed the distinguished speaker **Dr. Jyoti Kala**, Associate Professor, Department of English, B.S.N.V.P.G. College, Lucknow. Dr. Kala had been actively engaged in academic activities and had organized 4 webinars, including one International, and delivered 5 lectures during the period of lockdown.



The event was presided over by the Principal **Shri Rakesh Chandra** who mentioned about the aim and objectives of this campaign, “Mission Shakti” and the importance of creating awareness regarding the safety, security and empowerment of women. This campaign was started in 'Shardiya Navratri' and was continuing for the next six months till Chaitra Navratri. The campaign had two phases, Mission Shakti and Operation Shakti. The first phase of this program will spread awareness on women safety and their dignity and will focus on legal or massive action to be taken against those who are posing threat to the safety of women. The second phase of this program focuses on eve teaser and to punish or reform them because any type of crime against women's safety and their dignity will not be tolerated. Female police constables will be available in 1535 police stations taking urgent action on complaint of crimes against women.

Dr. Jyoti Kala presented an elaborative, informative and enlightening discourse on the topic **The Protection of Children from the Sexual Offence, Act, 2012 (POSCO Act 2012)**. She mentioned about the necessity of this special act to ensure the safety of children (both male and female up to age 18), the articles and provisions of this act, types of crimes and punishments for them, role and responsibility of police, medical staff and judiciary in such cases. She clarified that the Abetment is also treated with same gravity as commission of that offence (Section 16). Trafficking of children for sexual purposes is covered under abetment (Section 16, Explanation III). Any attempt to commit an offence is liable to be penalized, for upto half the punishment prescribed for that offence (Section 18). In elaborating the procedure for reporting of cases she told that the offence can be reported to the SJPU or the local police (Section 19). In case, child is in need of care and protection, SJPU/ local police will provide such care within 24 hours of the report (Section 19(5)). SJPU/ local police need to report the matter to CWC and Special Court within 24 hours (Section 19(6)). Failure to report is commission of offence which is punishable with imprisonment of six months or with fine or both (Section 21(1)). Failure to report by a person, who is in-charge of any company or an institution, in respect of offence committed by subordinate under his control, is also punishable with imprisonment of one year and fine (Section 21(2)). But at the same time failure to report is not punishable in case of a child (Section 21(3)). False complaint against any person with malicious intent is punishable with imprisonment of 6 months or with fine or both (Section 22 (1)). False complaint against child is punishable with imprisonment of one year or



with fine or with both (Section 22(3)). She highlighted that there is no civil or criminal liability for giving information in good faith (Section 19(7)) and Media cannot disclose the identity of the child, except when permitted by the Special Court (Section 23). The procedures for Recording Statement should be the Child friendly procedures (Section 24) and the recording may be done at the residence of child by the officer not below the rank of sub-inspector. Police officer should not to be in uniform and the victim child must not come in contact with the accused. The child cannot be detained in police station in night. She also elaborated the types of offences and the punishment decided for them. At last she asked the parents to be friendly, cautious and aware about such problems.

The session was concluded by the Convener, Dr. Madhu Bhatiya, who extended vote of thanks to the speaker, principal and all attendees.





राष्ट्रीय वेबिनार राष्ट्रीय एकता दिवस

31 अक्टूबर 2020

बप्पा श्रीनारायण वोक्शनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ
शैक्षणिक विकास समिति द्वारा आयोजित
“राष्ट्रीय एकता दिवस उत्सव”
दिनांक 31 अक्टूबर, सायं 4 बजे

विशिष्ट वक्ता
डॉ० एम० एम० सेमवाल
अध्यक्ष, राष्ट्रीय विज्ञान विकास
हेमवती नंदन बहुगुणा केंद्रीय
विश्वविद्यालय, गढ़वाल

विशिष्ट वक्ता
डॉ० राकेश चंद्रा
प्राचार्य
श्री० रामा प्रसाद शीव पी०जी० कॉलेज

संयोजक
डॉ० ज्योति काला

आयोजन सचिव
डॉ० मंजुन विवेदी

नोट:- इस अवसर पर विद्यार्थियों हेतु “राष्ट्रीय एकता की भूमिका एवं
असमर्थन” विषय पर अन्वेषण का भी आयोजन किया जावेगा, इसका
विद्यार्थी सम्पर्क करें- 7671888307

मीटिंग आईडी-85785823154
पासवर्ड- 013970

बप्पा श्री नारायण वोक्शनल महाविद्यालय केकेवी, लखनऊ के द्वारा दिनांक 31 अक्टूबर को “राष्ट्रीय एकता दिवस” उत्सव का आयोजन किया गया। एकता दिवस के इस अवसर पर महाविद्यालय में एनसीसी तथा एनएसएस कैडेट्स के द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० राकेश चंद्रा के द्वारा समस्त विद्यार्थियों को एकता शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम के द्वितीय भाग के अंतर्गत महाविद्यालय की शैक्षणिक विकास समिति के द्वारा वेबिनार का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय एकता दिवस उत्सव के संदर्भ में आयोजित इस वेबिनार में मुख्य वक्ता के रूप में हेमवती नंदन बहुगुणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, गढ़वाल के राजनीति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो० एम० एम० सेमवाल ने भाग लिया।

कार्यक्रम का प्रारंभ संयोजक डॉ ज्योति काला के द्वारा सभी के औपचारिक स्वागत के द्वारा हुआ डॉ काला ने इस दौरान मुख्य वक्ता प्रो० सेमवाल का संक्षिप्त परिचय दिया। प्रो० सेमवाल ने अपने वक्तव्य के माध्यम से सरदार पटेल के व्यक्तित्व एवं उनके द्वारा किए गए कार्यों का विस्तृत विवेचन किया। उन्होंने कहा की जिस



आधुनिक भारत का स्वरूप हमें दिखाई पड़ रहा है उसके शिल्पी सरदार वल्लभ भाई पटेल ही है। इसके साथ ही उन्होंने सरदार पटेल के जीवन से संबंधित कतिपय प्रेरक प्रसंगों को भी साझा किया। बारदोली सत्याग्रह, नमक आंदोलन, किसान आंदोलन आदि में पटेल के योगदान को भी उनके द्वारा बताया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० राकेश चंद्रा ने विशिष्ट वक्ता के रूप में सरदार पटेल के योगदान का वर्णन करते हुए कहा कि जिस अधिनियम के अंतर्गत भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई उसमें यह प्रावधान किया गया कि जो देशी रियासतें हैं या प्रोविसेंसीज हैं वह स्वेच्छा अनुसार भारत में विलय कर सकती हैं अथवा स्वतंत्र रह सकती हैं। किंतु यह सरदार पटेल के प्रयासों का ही प्रतिफल है कि हम एक अखंड भारत में निवास कर पा रहे हैं। यह सोचना ही अत्यंत दुष्कर है कि यदि एक देश में इतने सारे राज्य स्वतंत्र होते तो वह स्थिति कितनी चुनौतीपूर्ण होती।

इस दौरान विभिन्न महाविद्यालयों के छात्रों हेतु “राष्ट्रीय एकता की चुनौतियां एवं समाधान” विषय पर संभाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। संभाषण प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रतियोगी के रूप में शिवांगी कश्यप को निर्णायक मंडल द्वारा चुना गया। कार्यक्रम के अंत में वेबीनार के आयोजन सचिव डॉ० मंजुल त्रिवेदी द्वारा सभी को औपचारिक धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

इस अवसर पर विभिन्न विश्वविद्यालयों महाविद्यालयों के शिक्षक एवं विद्यार्थी महाविद्यालय के वेब मंच पर उपस्थित रहे।





राष्ट्रीय वेबिनार

न्यू एजुकेशन पॉलिसी 2020 इट्स इंप्लीमेंटेशन विद स्पेशल रेफरेंस टू इंडियन कल्चर आर्ट्स लैंग्वेज एंड लिटरेचर

26 दिसम्बर 2020

B.S.N.V. P. G. COLLEGE, LUCKNOW



Organising a National Webinar on
New Education Policy-2020
 its implementation with special reference to Indian culture,
 Arts, Languages and Literature



Patron
Shri T.N. Mishra



Patron
Shri Ratnakar Shukla



Key Note Speaker
Prof. Kiran Hazarika
Hon'ble Member-U.G.C



Inaugural Address by
Prof. Alek Kumar Rai
V. C., University of Lucknow

Timing- 03:00 P:M On 26/12/2020, Online Platform- Zoom



Prof. Rakesh Chandra
Principal



Dr. J. S. P. Pandey
Convener



Dr. Ram Kumar Tiwari
Organising Secretary

बी०एस०एन०वी०पी०जी०, चारबाग, लखनऊ द्वारा दिनांक 26.12.2020 को “न्यू एजुकेशन पालिसी 2020 इट्स इंप्लीमेंटेशन विद स्पेशल रेफरेंस टू इंडियन कल्चर आर्ट्स लैंग्वेज एंड लिटरेचर” विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती की वंदना से हुई। कार्यक्रम में स्वागत भाषण प्राचार्य प्रो० राकेश चंद्रा द्वारा दिया गया जिसमें उन्होंने कालेज के इतिहास के विषय में बताया कि कालेज की स्थापना पंडित श्री नारायण मिश्र जी ने 1954 ईस्वी में की। सन् 1995 और 96 में हिंदी तथा समाजशास्त्र विषय तथा 2001 में जूलॉजी में स्नातकोत्तर की कक्षाएं प्रारंभ हुई। कॉलेज का प्रबंध तंत्र सदैव छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयासरत रहता है। प्रो० चंद्रा ने मुख्य वक्ता एवं गणमान्य अतिथियों का वेब मंच से स्वागत किया।



महाविद्यालय की प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री टी०एन० मिश्र जी ने अपने आशीर्वचन से महाविद्यालय परिवार को अभिसिंचित किया। मंत्री/प्रबंधक श्री रत्नाकर शुक्ल जी ने नई शिक्षा नीति-2020 को एक क्रांतिकारी विषय के रूप में बताया उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति मातृभाषा के महत्व पर जोर देती है किंतु उसके दुष्परिणामों के प्रति भी हमें सचेत होना चाहिए। श्री रत्नाकर शुक्ल जी के अनुसार नई शिक्षा नीति में सबसे अच्छी बात विदेशी विश्वविद्यालयों की शाखा खोलने की बात है जिससे हमारे बच्चों को अध्ययन के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा। उद्घाटन भाषण में लखनऊ विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति प्रो० आलोक कुमार राय ने अपने संबोधन में यह बताया कि नई शिक्षा नीति के प्रावधानों को लागू करने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय अभी से प्रयासरत है। प्रो० राय के अनुसार नई शिक्षा नीति छात्र केंद्रित है और इसे हम निम्न बिंदुओं में समझ सकते हैं –

- 1— इस शिक्षा नीति का उद्देश्य छात्र का सर्वांगीण विकास करना है न केवल परीक्षा पास करने योग्य बनाना।
- 2— शिक्षा का अंतर्राष्ट्रीयकरण करना तथा भारतीय शिक्षा संस्थानों को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप विकसित करना।
- 3— लचीली शिक्षा व्यवस्था –छात्र को प्रत्येक वर्ष का लाभ दिया जाए अर्थात् किसी छात्र की पढ़ाई बीच में छूट जाती है तो उसके द्वारा पढ़े समय का उसे लाभ मिले।
- 4— उच्च शिक्षा को रोजगार पर बनाने की जरूरत है, इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने बताया कि लखनऊ विश्वविद्यालय में हम इस सत्र से प्रत्येक छात्र को समर कोर्स या इंटर्नशिप करना अनिवार्य है।

कार्यक्रम में बीज वक्ता के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के माननीय सदस्य प्रो० किरण हजारिका जी ने नई शिक्षा नीति पर विस्तार से प्रकाश डाला, उन्होंने बताया कि यह शिक्षा नीति भाषा, शिक्षा एवं कला के क्षेत्र में नया मानदंड स्थापित करेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, इक्कीसवीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है, जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है यह नीति भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए इक्कीसवीं सदी की शिक्षा के लिए व्यवस्था के सभी पक्षों के सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव रखती है।

प्रो० किरण हजारिका के अनुसार 34 वर्षों के पश्चात राष्ट्रीय शिक्षा नीति में बदलाव किया जा रहा है इसके पूर्व 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी थी जो अपने अंतिम परिणाम तक शायद ही पहुंच पाई। इस समिति का प्रारूप 2017 में ही तैयार कर लिया गया था। इसरो के प्रमुख के कस्तूरीरंगन समिति के अध्यक्ष थे। मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। पहली बार शिक्षा नीति का केंद्र भारतवर्ष होगा यह शिक्षा नीति भारतीय युवाओं को भारतीय संस्कृति से जोड़ेगी।

स्कूली शिक्षा के प्रारूप में बदलाव किया गया है, अब 10+2 के स्थान पर 5+3+3+4 के हिसाब से नया स्कूली पाठ्यक्रम लागू होगा, पहले 3 साल बच्चे आंगनवाड़ी केंद्रों में शिक्षा लेंगे फिर अगले 2 साल एक एवं दो में पढ़ेंगे। कक्षा 6 से ही प्रोफेशनल और कौशल विकास कोर्स की शुरुआत होगी। इसका उद्देश्य बच्चों को स्कूली शिक्षा के दौरान ही रोजगार के अवसर प्रदान करना है। परीक्षा के प्रारूप में भी बदलाव किया गया है 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षा ऑब्जेक्टिव और सब्जेक्टिव प्रारूप में होंगी। रटने के बजाय छात्रों के अंदर ज्ञान विकसित करने पर ज्यादा जोर होगा। नई शिक्षा नीति में कक्षा 5 तक मातृ भाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा प्रदान करने



की बात की गई। सरकारी हो या प्राइवेट सभी विद्यालयों को इस बात को स्वीकार करना होगा। छात्र विदेशी भाषा कक्षा 9 से पढ़ सकेंगे। संस्कृत को विकल्प के रूप में चुनने का मौका दिया जाएगा। उच्च शिक्षा की बात करें तो मल्टीपलएंट्री और एग्जिट सिस्टम लागू किया जाएगा, यदि छात्र बीच में कोर्स छोड़ देता है तो उसका साल बर्बाद नहीं होगा उसको 1 साल पर सर्टिफिकेट 2 साल पर डिप्लोमा और 4 साल पर कंप्लीट डिग्री मिलेगी। इससे उन छात्रों को फायदा होगा जिनकी पढ़ाई बीच में छूट जाती है। पांच साल का संयुक्त ग्रेजुएट कोर्स लाया जाएगा। तीन साल का डिग्री कोर्स उन छात्रों के लिए होगा जिन्हें उच्च शिक्षा में नहीं जाना है। शोध में जाने के लिए छात्रों को 4 साल की डिग्री करनी होगी। अब छात्रों को एमफिल करने की जरूरत नहीं होगी। नई शिक्षा नीति 2020 में 2035 तक 50 प्रतिशत ग्रास इनरोलमेंट रेशियों पहुंचाने का लक्ष्य है।

शिक्षण संस्थाओं में कला एवं संस्कृति से संबंधित विषयों को पढ़ाया जाएगा। अब कला, वाणिज्य एवं विज्ञान जैसा कोई विभाजन नहीं होगा छात्र अपनी पसंद के कोई भी विषय चुन सकेंगे यह शिक्षा नीति अत्यंत दूरगामी प्रभाव उत्पन्न करेगी। मेडिकल एवं ला को छोड़कर सभी उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए उच्च शिक्षा कमीशन ऑफ इंडिया बनाया जाएगा, यह यूजीसी का स्थान लेगा। नई शिक्षा नीति में कॉमन एंट्रेंस एग्जाम की बात भी की जा रही है यह परीक्षा नेशनल टेस्टिंग एजेंसी कराएगा यद्यपि यह अनिवार्य नहीं होगा छात्र इससे मुक्त भी हो सकेंगे। कालेजों को स्वायत्तशासी बनाने की ओर नई शिक्षा नीति ध्यान केंद्रित करती है। आगे ये कालेज डिग्री प्रदान कर सकेंगे या किसी विश्वविद्यालय से जुड़कर डिग्री प्रदान करेंगे।

विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में अपनी ब्रांच खोलने की इजाजत दी जाएगी जिससे भारत के बच्चों को बाहर जाकर शिक्षा न लेनी पड़े लेकिन यह छूट उन्हीं विश्वविद्यालयों को मिलेगी जो टॉप ग्लोबल रैंकिंग वाले होंगे। शोध की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए नेशनल रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना एक शीर्ष निकाय के रूप में की जाएगी। क्षेत्रीय भाषाओं में तकनीकी पाठ्यक्रम विकसित करने की योजना है सभी भारतीय भाषाओं के संरक्षण, विकास एवं जीवंत बनाने के लिए शिक्षा नीति में पाली, फारसी प्राकृत भाषाओं के अनुवाद संस्थान की स्थापना की जाएगी। शिक्षा बजट को जीडीपी का 6 प्रतिशत करने का लक्ष्य है जिससे शिक्षा का स्तर ऊंचा उठ सके।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि इस शिक्षा नीति से शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक बदलाव होगा इससे शिक्षा के क्षेत्र में सुखद परिणाम देखने को मिलेंगे। यह पहली शिक्षा नीति है जिसमें हम भारतीयता की तरफ देख रहे हैं। कार्यक्रम का संचालन डा० जयशंकर पाण्डेय जी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ० मंजुल त्रिवेदी जी ने किया। कार्यक्रम का समापन प्राचार्य प्रो० राकेश चंद्रा जी ने किया। इस अवसर पर विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों से शिक्षक एवं छात्र प्रतिभागी के रूप में जुड़े। वेबिनार में रिपोर्ट लेखन का कार्य डॉ० कृष्ण चन्द्र एवं डॉ० अभिषेक उपाध्याय ने किया।



Deepak Kumar Sriv...



narendra awasthi



JPSingh



Dr. Barrister Kumar...





Shri T.N. Mishra



Rajiva Dixit



Dr. Vijay Kumar



Dr KK Bajpai



Prof. Vinod Kumar ...



Lallan Prasad



Sajni Misra



Dr. D. K. Gupta



Abha Pal



Ankita Srivast...



4edfda2



A.K.Sharma



Dr.Upasana Sri...



Dr.Durga Dutt ...



DR. I IADHU BH...



Adarsh Shukla





Rahul Kumar



Preetipant



Brijendra Singh



Rohan Srivastava





Shreya gupta k...



realme C2



Dr. N.K. Awast...




Harsh Narayan...



Dr. Binods Kuma...



 Dr. Nilima Gupta

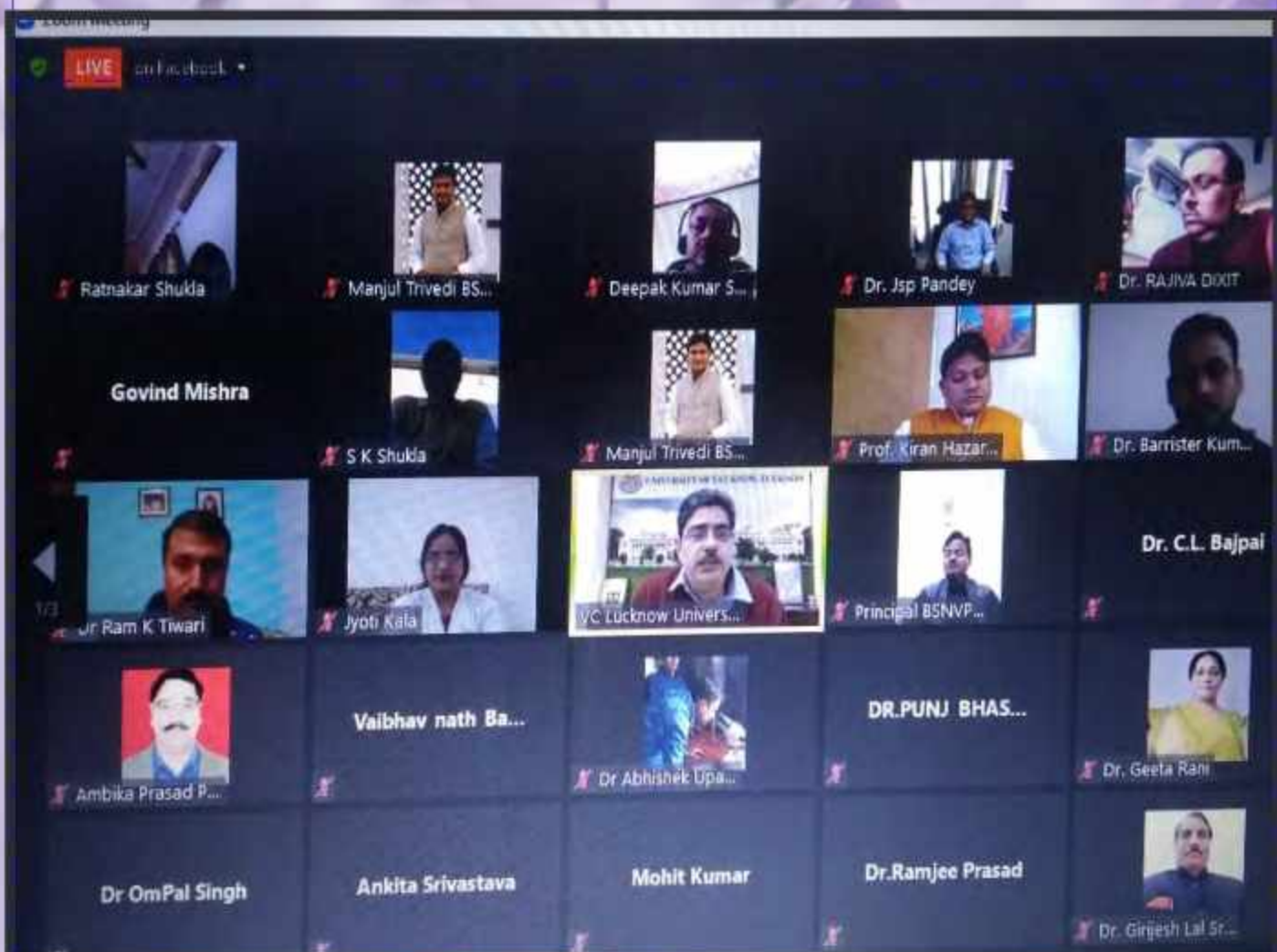


Rakesh Chandr...



ASUS_XOOTD





प्राण विज्ञानया न वबानार स साझा कय विचार

- » जीव अंतर संबंध, जैविक विज्ञान के हाल के मोर्चे
- » विषय पर केकेबी महाविद्यालय में वेबीनार

विषयवार्ता संवादकता

लखनऊ। कोरानावायरस की जो कारनाम दुनिया के प्राणि विज्ञान विभाग में शनिवार को जीव अंतर संबंध, जैविक विज्ञान के हाल के मोर्चे सांख्यिकीय (इंटर-मिनेशनल रिसेर) और प्राणि वैज्ञानिकता (इंटर-मिनेशनल रिसेर) विषय पर एक वेबीनार का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन कोरानावायरस इन्फोर्मेटिक्स के अध्यक्ष टी. एन. मिश्र ने किया।

वेबीनार की आयोजिका प्राणि विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. कौशिकी ने विषय की सीमा रखी। डॉ. सत्येव मुखर्जी एवं डॉ. अशोक कुमार ने प्रतिभागियों का परिचय कराया। एनएचके के रूप में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राणि विज्ञान विभाग की पूर्ण विभागाध्यक्ष प्रो. निरुपमा अग्रवाल ने क्रिमिनी एवं मोनोकोनिनियस पर ध्यान एवं विज्ञान के अंतर संबंध पर बात की।



कोरानावायरस की कारनाम दुनिया के प्राणि विज्ञान विभाग में आयोजित वेबीनार में प्रतिभाग करने प्रतिभागियों



संयोजकों की भी प्रशंसा की।

साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि इसने वर्ष 2021 में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राणि विज्ञान विभाग को जड़े अंतराष्ट्रीय सम्मेलन अन्तर्गत मोनोकोनिनियस की मेजबानी मिली है। जो प्राणि विज्ञान विभाग के लिए शौर्यपूर्ण है। इसी क्रम में सत्येव के पूर्व मुख्य वैज्ञानिक डॉ. ए. के. मुखर्जी ने प्राणि विज्ञान के

आर्थिक बढत एवं उनका प्रभाव अन्तर्गत की विचार में प्रस्तुत किया।

महोदयों के सभी प्रश्नों का उत्तर देकर मुखर्जी ने की विचार रखी। अन्तर्गत सत्येव मुखर्जी ने भी विषय पर प्रकाश डाला। इस वेबीनार में केएल अशोक के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के डॉ. सत्येव मुखर्जी सहित देश विदेश के लगभग 500 वैज्ञानिकों, शिक्षकों एवं छात्रों का भी भाग ले लिया गया।

के लिये साझा की वे प्रतिक्रिया किया। अंत में डॉ. अशोक मुखर्जी ने सभी को शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर विभाग के शिक्षक डॉ. अनंद कुमार, डॉ. वैजयंती मुखर्जी, डॉ. शक्ति कान्त मुखर्जी, डॉ. सत्येव मुखर्जी, डॉ. अशोक मुखर्जी, डॉ. विवेक दीक्षित, विवेक दीक्षित, प्राणि विभागाध्यक्ष के सचिव प्रो. निरुपमा अग्रवाल एवं प्रो. निरुपमा अग्रवाल

केकेबी महाविद्यालय में जीव अंतर संबंध, जैविक विज्ञान के हाल के मोर्चे विषय पर वेबिनार आयोजित

लखनऊ। कोरानावायरस की जो कारनाम दुनिया के प्राणि विज्ञान विभाग में जीव अंतर संबंध, जैविक विज्ञान के हाल के मोर्चे विषय पर एक वेबीनार का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन की एन एन की इन्फोर्मेटिक्स के अध्यक्ष टी. एन. मिश्र ने किया। वेबीनार की आयोजिका प्राणि विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. कौशिकी ने विषय की सीमा रखी। डॉ. सत्येव मुखर्जी एवं डॉ. अशोक कुमार ने प्रतिभागियों का परिचय कराया। मुख्य बहता के रूप में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राणि विज्ञान विभाग की पूर्ण विभागाध्यक्ष प्रो. निरुपमा अग्रवाल जी ने क्रिमिनी एवं मोनोकोनिनियस पर भारत एवं विश्व में किने किये। मोनोकोनिनियस एवं मोनोकोनिनियस की मेजबानी मिली हुई है। जो प्राणि विज्ञान विभाग के लिए शौर्यपूर्ण है। इसी क्रम में सत्येव के पूर्व मुख्य वैज्ञानिक डॉ. ए. के. मुखर्जी ने प्राणि विज्ञान के

आर्थिक बढत एवं उनका प्रभाव अन्तर्गत की विचार में प्रस्तुत किया। महोदयों के सभी प्रश्नों का उत्तर देकर मुखर्जी ने की विचार रखी। अन्तर्गत सत्येव मुखर्जी ने भी विषय पर प्रकाश डाला। इस वेबीनार में केएल अशोक के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के डॉ. सत्येव मुखर्जी सहित देश विदेश के लगभग 500 वैज्ञानिकों, शिक्षकों एवं छात्रों का भी भाग ले लिया गया। अंत में डॉ. अशोक मुखर्जी ने सभी को शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर विभाग के शिक्षक डॉ. अनंद कुमार, डॉ. वैजयंती मुखर्जी, डॉ. शक्ति कान्त मुखर्जी, डॉ. सत्येव मुखर्जी, डॉ. अशोक मुखर्जी, डॉ. विवेक दीक्षित, विवेक दीक्षित, प्राणि विभागाध्यक्ष के सचिव प्रो. निरुपमा अग्रवाल एवं प्रो. निरुपमा अग्रवाल

जीव अंतरसंबंध विषय पर चर्चा

[illegible]

इससे पहले जर्मनी के बारे में विस्तृत से समझें। पश्चिम जर्मनी के यंत्रीकरण के कारण कृषि और प्रत्येक अन्य क्षेत्र में भी विप्लव प्रकट हुआ। रैडिकल परिवर्तन के माध्यम से ही जर्मनी को संयुक्त राष्ट्र के सदस्य बनाने में सफलता मिली। 500 रैडिकल, जर्मनी का समाज को विकसित करने में सफल हुए, अर्थात् ही आर्थिक समेत

निकट 1 पैदावार 2

1

वेबिनार ②

वेबिनार 3

पृष्ठ / पृष्ठ संख्या

[illegible]

2
 1. **संसाधन का अर्थ**
 संसाधन वह चीजें होती हैं जो हमारे
 जीवन में उपयोग में आती हैं।
 जैसे पानी, धातु, वनस्पति, प्राणी,
 ऊर्जा, भूमि, आदि।
 2. **संसाधन का वर्गीकरण**
 संसाधन को दो भागों में बांटा जा सकता है।
 1. **प्राकृतिक संसाधन** - जो हमारे
 चारों ओर मौजूद हैं।
 2. **मानव निर्मित संसाधन** - जो हमने
 अपने हाथों से बनाए हैं।

वेबिनार 3
आधुनिकता में पुरुषों और
महिलाओं के बीच के अंतर
है, अलग-अलग समाज
में इन अंतरों में भी अंतर है। अलग-अलग
समाज में पुरुषों और महिलाओं के बीच
के अंतर को समझना समाज के
समाज के अंतरों में अंतरों को
समझना है, वेबिनार में पढ़ें।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मधुमक्खियों का बताया आर्थिक महत्व

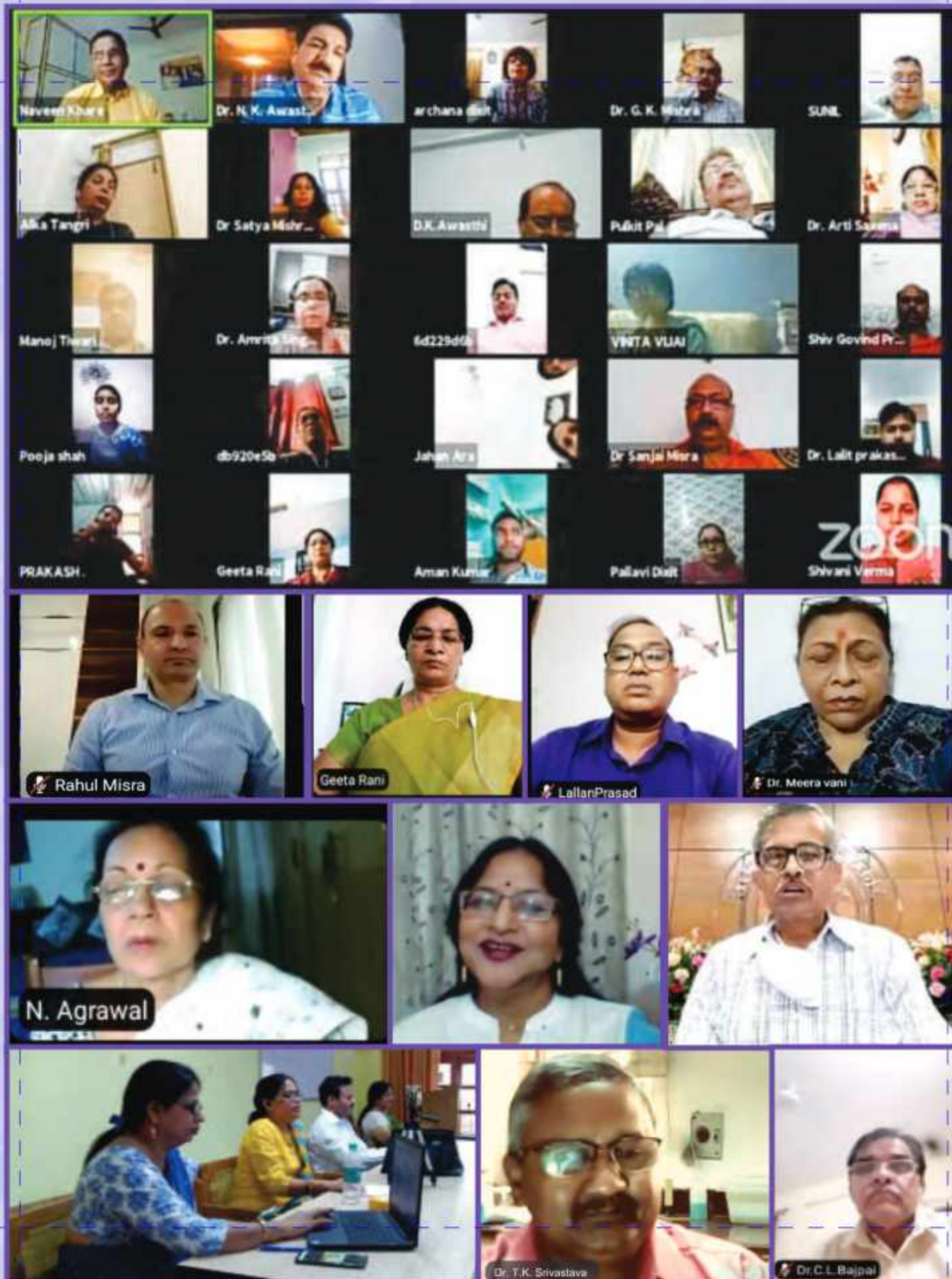
मध्यमविधियों का बचाव
 ॥ प्रत्यक्ष, लक्ष्मण: बोस्मान्नी बीजे कॉलेज में शनिवार को
 वैश्व विज्ञान के हल के नवें विषय पर शनिवार को वैश्वार हुआ। इसका
 उद्घाटन बोस्मान्नी इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष टीन मिश्र ने किया। कार्यक्रम में बतौर
 मुख्य अतिथि राज्य के प्रतिष्ठित विद्वान की पूर्ण हंड प्रो. निरुपमा अग्रवाल मौजूद
 हैं। तैमैय के पूर्व मुख्य वैज्ञानिक डॉ. एके त्रिपाठी ने मध्यमविधियों के आर्थिक महत्व
 और उनसे जो उल्लेखों को समझाया। कार्यक्रम में कॉलेज के प्रभारी प्रबंधक रत्नाकर
 शुक्ल, प्रबन्धक संकेत चंद्र, ज्योतिष यूनिवर्सिटी के डॉ. सैलेन्द्र सिंह समेत देश-विदेश
 के 500 वैज्ञानिक, शिक्षक, एमएससी और बोस्मान्नी के स्टूडेंट्स ने भाग लिया।

आत्मविश्वास से दूर होंगी हर तरह की मुश्किलें

आत्मविश्वास से दूर होगा हर तरल
 पन्नी, लखनऊ: लखनऊ पब्लिक कॉलेज ऑफ फॉरेन लैंग्वेज स्टडीज की शैक्षणिक कार्यवाही के दौरान विद्यार्थियों को विश्वास पर केंद्रित हुआ। इसमें आत्मविश्वास को बढ़ावा देने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया गया।
 डॉ. मधु भार्गव ने कहा कि आत्मविश्वास हर परिस्थिति में सबसे महत्वपूर्ण है। इससे हर तरह की मुश्किलें दूर होती हैं। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं में ही विश्वास के साथ ही परीक्षा देनी है। बच्चों को इस समय

वेबिनार : बड़ा आर्थिक संसाधन साबित हो सकती हैं मधुमक्खी

[illegible]





Sri T.N. Mishra



VC Lucknow University



Ratnakar Shukla



Principal BSNVPG Colle.



Prof. Kiran Hazarika



Academic development co...



Sajni Misra



Manjul Trivedi



Dr. Vandana Kalhans



Prof. M.M. Semwal



neerja misra



Dev Shukla



Madhu bhatia



Dr. Gunjan Pandey



C P S's iPad



Jyoti Kala